



I ISSN 2229-547X VI DEHA

बिदेह १३३ म अंक ०१ जुलाई २०१३ (वर्ष ६ मास ६६ अंक १३३)



१ अंकमे अङ्कितः-

१. संपादकीय संदेशे

२. गद्य

—



२.१. कामिनी कामायनी- वयकथा-कैन डवि पव केकव खोता

२.२. सगव बाति दीप जवयक १६ म आयोजन कथा केसी उमेशे पासरानक  
संयोजकतरेमे ँबहामे सम्पन्न/ +० म सगव बाति दीप जवय सुपौव जिवक



निर्मलीमे उमेशे माडवक संयोजकतरेमे बिपोर्ठे पुनम मन्डव

—



२.३. बिन्दुशिव ठाकुर- इष्टा रिहनि कथा

—



२.४. जगदीश प्रसाद मिश्र-व्यक्त्या-चुप्पा पाव



२.५. जगदानन्द या 'मनु'-३. १। रिहनि कथा



२.६. खजुरेशी कुमार मिश्र-पंचरेदी



२.७. प्राज्ञ कापडि केशिरानी राथ शिवपा सम्मानसँ सम्मानित बिपोर पनम मन्दव



२.८. उमेश मिश्र-व्यक्त्या-जीरिते नरक

### ३. पद्य



३.१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिन'-गजल १-४



३.२.१. कञ्ची कामत-गीत:- जठ-जठिन २.



शालिनीरमेश चौधरी-नेताजी



३.३. जगदानन्द ना 'मनु'- के पतियाएत



३.४. मनोज कुमार मन्डल-देशी कौखा



३.५. रामेन्द्रन कुमार कर्ण- गजल



३.६. जगदीश प्रसाद मण्डल-सुखल काज



३.७. बाजदेर मण्डल- दु ठा करिता



३.८. सुरे नारायण-नहकैत समाज

 बिदेह मैथिली पोथी डाउनलोड साइट

 VIDEHA MAITHILI BOOKS FREE DOWNLOAD SITE



बिदेह ई-पत्रिकाक सब्झा प्रवान अंक ( ब्रैल, तिवहता आ देरनागरी मे ) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेल नीचाक लिंकपर उपलब्ध अछि । All the old issues of Videha e journal ( in Braille, Tirhuta and Devanagari versions ) are available for pdf download at the following link.

बिदेह ई-पत्रिकाक सब्झा प्रवान अंक ब्रैल, तिवहता आ देरनागरी रूपमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह ई-पत्रिकाक पहिल ३.० अंक

बिदेह ई-पत्रिकाक ३.०म सँ आगाँक अंक



बिदेह आब.एस.एस.फीड एनीमैकैबकेँ अपन साँघै/ रीडिंगपर लगाउ ।



रीडिंग "लेखाउठ" पर "एड गाडजेक" मे "फीड" सेलेकै कए "फीड यू.आब.एन." मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ठाँगपर केलासँ सेहो बिदेह फीड प्राप्त कए सकैत छी । गुगल रीडरमे पढ़ाै लेल <http://reader.google.com> पर जा कए Add a Subscription रीडर क्लिक करू आ खाली स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml> पेसकै करू आ Add रीडर दराँड ।



Join official Videha facebook group.



Join Videha google groups



बिदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पौडकास्ट साँघै

<http://videha123radio.wordpress.com/>



मैथिली देरनागरी रा मिथिलाम्बरमे नहि देखि/ लिखि पारि बहर छी, (cannot see/write Maitthili in Devanagari / Mithi lakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पब जाउ । संगहि रिदेहक सुँभ मैथिली भाषापक/ बचना लेखनक नर-प्रवान अंक पढ़ू ।

<http://devanagari.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रॉकमे ऑनलाइन देरनागरी षाँगप कक, रॉकसँ कपी कक आ रडि डक्यूमेन्टमे पेसठ कए रडि फागतकेँ सेर कक । विशेष जानकारीक लेर ggajendra@videha.com पब संपर्क कक ।)(Use Firefox 4.0 (from [WWW.MOZILLA.COM](http://WWW.MOZILLA.COM) )/ Opera/ Safari/ Internet Explorer 8.0/ Flock 2.0/ Google Chrome for best view of 'Videha' Maitthili e-journal at <http://www.videha.co.in/> .)

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maitthili e magazine in .pdf format and Maitthili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. रिदेहक प्रवान अंक आ ऑडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फागत सभ (उचावण, रँड सुथ साव आ दूरस्थित मंत्र सहित) डाउनलोड कवरॉक हेतु नीचाँक लिंक पब जाउ ।

VIDEHA ARCHIVE रिदेह आर्काइव



जातिबिधिब पूर्ण महकरि रिद्योपति । भारत आ नेपालक माँष्टमे पसबन मिथिलाक धवती प्राचीन कारहिँसँ महान प्रकष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि बहर अछि । मिथिलाक महान प्रकष ओ महिला लोकनिक चित्र मिथिला बने मे देखु ।



गौरी-शैकवक पानरणि कानक मुर्ति, एहिमे मिथिनाम्बरमे (१२०० र्ष प्रूरक) खलिनैथ  
थंकित खडि । मिथिनाक भावत आ नेपाक माईमे पसवत एहि तबहक खान्या प्रार्चन  
आ नर स्थापन, चित्र, खलिनैथ आ मुर्तिकनाक हेतु देखु मिथिनाक खोज

मिथिना, मैथिन आ मैथिनीसँ सल्लखित सूचना, संपर्क, खल्लषण सर्गहि बिदेहक सर्च-गंजन  
आ नृज सर्सि आ मिथिना, मैथिन आ मैथिनीसँ सल्लखित रेसगाँठ सल्लक समग्र  
संकननक नेत देखु बिदेह सूचना सर्पक खल्लषण

बिदेह जानरुतक डिस्कसन फोबमपव जाड ।

“मैथिन आब मिथिना” (मैथिनीक सल्लसँ लोकप्रिय जानरुत) पव जाड ।

## २. गद्य



२.१. कामिनी कामायनी- वयकथा-कैन डारि पव केकव खोता

२.२. सगव बाति दीप जवयक १७ म खायोजन कथा केसी उमेशे पासरानक  
संयोजकत्रमे ँबहामे सम्पन्न/ +० म सगव बाति दीप जवय सुपौव जिवक

निर्मलीमे उमेशे म्पडक संयोजकत्रमे बिपार्ल



पुनम मन्डव



—



२.३. रिन्दुशैव ठाकुर- ३१ रिहनि कथा

—



२.४. जगदीश प्रसाद मण्डव-वधुक्था-चुप्पा पाव



२.३. जगदानन्द या मन्त्र-३ १ रिहनि कथा

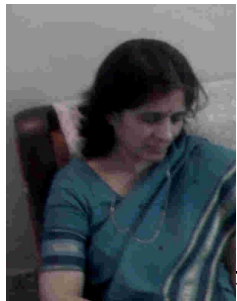


२.३. खजिनेश कुमार मण्डव-पंचरेदी

२.१. प्राञ्ज कापडि केशरनाथ राँध शिवपा सम्मानसँ सम्मानित बिपोरठ पुनम मन्डव



२.४. डमेशे मण्डव-वधुक्था-जीरिजे नरक



कामिनी कामायनी



## वधुकरथा-

### कनन डाबि पब केकरव खोता ।

“ये रैनहन ,कनी थमि जेथ ,तिरकौड क तकरा तेव बहन छिअन्ह,तखन खगहथि ।  
रैनहन ओसावा प बाखन पीढ़ी प रँगस गेन छनिह,सोमना पबसन थारी बाखन छन, दिनक  
एगावह रौजि बहन छन,कदरैक गाछ के ङुपव स सुकज महाबाज दूनिया भविक गाम  
घबक हिसारै कितारै नेरौ नेन झुँद भेन अपन ताप स चहुँ दिस के खड पात धवि  
मवका बहन छनिथि । ,आय रँष्टेदाव सरँ स खेत पखावक हारँ डीरँ नगत नगत रँड  
रँव भ चूकर छन ,झुपा तीर भ गेन छनेह,रँजनी “आरँ बहय दिणुँ एखन ,वाति क  
रँना नेरँ ,एखन अछु आरँ जाडु खेरौ नेन ,अछु के भुख नागर हत । झुदा तारेत  
त पहिनहि स धकन चूनी प चढ़न लोहिया मे कडुक तेन पडपड य नगने त  
केवार क घाँठि मे पात नष्टपष्ट क हँव हँव लोहिया मे खसा चूकर छनिह ।

हूनक ङ तपेवता आ अन्नबाग देखि क ,ओ कनी कार नेन हाथ रौबि नेने बहथि ।  
कनी रिनरँ स दनु गौष्टे सोमना सोमनी रँगस क मीन भ अपन भोजन ग्रहण कवय  
नागर छनिह ।

नरँका डी जेन के लोहा नकड सीमेँ स रँनर घब जे सारिकक खबिहान मे  
रँनर छन,ओ त रँनिक छनेह,कनिया के रँखवा मे त पवना खपडँन घड ाडी, झुदा  
आरँ कन,दुहू घब त अपने सन । ओठ षै चास रँस झुदा बहनीहवि ,जेना  
रँडका पोखवि मे दू षै पोठी माछ । अन्न पानि कोठी,तोठी मे बखनाय,डसनीया  
कूँया आरँ पुवने आँगन मे होय :एक्का दूगी जे सब कूँय आरँन त हूनक बहरँ के  
रँरँस्ता नरँका घब मे होय । ओहना मन रँष्टेवय नेन ओ दू कखनोँ अहि घब त  
कखनोँ ओगा घब मे दिन र वाति काँठि नगत । ओना त टोव चहावक हदस लोकके  
पहिनहुँ पगसन बहे ,झुदा आरँ ककुराँ घब जिनक झुथिया रँ कुरदीपक पबदेस कमाङ  
कवय गेन छनेथ,ओत त रँसेथ कपे बतिजगा भ जाय । आ हिनको दू के  
पवान सदिखन सिथुरा मे रँन तडपगत बहेह । कहरौँ कवथि ‘धन संपत्ति बूँरौ के  
डव नहिँ, सुने छिये जे मोगी सरँ के हाथ पएव काँठि क ,की रूँड ,की रँचा ,सरँहक  
गज्जतोँ सेहो बगत नगतके । आ अहि डरे षेक नरँतविषा पिया पुत्रा सरँ  
के रँडि मे कडन नताम ,नेरौँ ,त कखनोँ केवा, आम ,कठहव ,नीची ,





बाँष्टि क मोने मोँ न अपन ब्रोज तैयाव केने बँथ जे रँव करँव गदह केना प  
आन कियो आरँ रा नई आरँ अहि मे स किछु ने किछु त अरँस्र आयत । आ ओ  
सरँ कहरँ करेन 'एक रँव ठक देरँ त केहना नीड मे बहरेँ ,दौगर चलि आयरँ' ।

ओ दुनू घबक रीचोरँच कनि पढुराड ी दिस घसकिक तेसब घब सेहो धँरुव  
धँरुव ,माघ धँरुव सन ताकेत ठाढ़ छन,झुदा तैयोँ एव स भवन ओ घब हिनका सरँ  
के श्रीकाव नई केकन्ह तारी नेन उमहबक बस्ता ठाँष्टि फँष्टा नगा क रँड पहिनहि रँन  
करी देन गेन छन । ओहो घब अहि दुनू घब प' अपन रफ दृष्टि बखने छन फुवाके  
स ।

जेठ रँसाथ क उमिनति गवमी , कतरँ पंथा ,कुनव नागर बँह ,मोष्टका  
मोष्टका पर्दा थिड़की प बँह ,झुदा नरँका घब त वाकसक झँह रँनि आगि उगलेँ , एष्ट  
के भङ्गी रँनन । तखन कनिया के माष्टिक ओसावा रँना दछिनरँबिया  
घब ,आहाहा ,एकदम शीतर ,जेना सुखा , रँड ी न्नाड ी स सीहकेत रँसात । त रँसी  
कार गवमी मे रँहिन ओहि ओसावा रँना घब मे नीचा रिछाओन पष्टिया प ,भात तीमन  
जे रँना रँथि कनिया प्रेम स ,था क , ओघडाघन बँहत छनी । पहाड सन दिन काँष्टय  
नेन नछा के नछा ओनवार गप्प के पेष्टाव खोनन जाय । आ पुवथा ,सव  
फँष्टम ,रँध रँन ,खड ीसीया पड ीसीया केकव कहाँ ,सरँहक कर्म फुर्मक कतेको  
रँव पुनर्मुन्याकन केन जाय । अहि एतिहासिक गप्प गोष्टी मे,दूपहबिया मे  
रँसी कार ठैनक स्त्रीगन सेहो सरँ जुष्टि,आ गामक ज्ञात एतिहास के कपक आ  
क्केपक सहित ओहि महान घड ीवाके सौजन्य स नरीन दृष्टि स जनेथ । “भुपिंदव  
कका के पेरनार त रिनाएथ गेलै ले । देखियो ,केहन उजाड नागै छँह हुनकव  
डीह । पहिने जखन हम दूवागमन कवि आयन बहि,कानी के भागक चर्च घरे  
घब ,सात ठाँ पुत ,दूँ ठाँ छोष्टका भविसक फुमाव छनेह,भवि घब पोता पोती ,कानी  
के हुर्मति चलय छन घब मे । कनिया देखय त तीन चाबिरँव आरँथ, “कनी ठाँ  
झँह हमहु देखरँ तिन रँवथक पोथा के जिद ,आ म्या कोहरँव मे आरँ क हमव  
घोघ उघाबि क देखा दङ्गथ । चूचुही स भवन ,रँडका नाम गाम रँना फँष्टम सरँ के  
आराजारी ,देखिते देखिते आरँ केहन उजाड भ गेलै । रँदति त सौसे गामे  
गेलै ,भग्याबी मे रँष्ट रँखवा होगत गेलै ,किओ रँड ी त,कियो ,गोहारी ,त कियो  
खबिहान मे चास रँस रँना नेनके ,झुदा हुनक पेरनार त उपष्टि गेलै जेना एतय  
स” । “से की कँह छथिन्ह,महारी के डीह देखथुन ,रँडका रँडका पाग रँना रँष्टा  
सरँ ,ओहन सुंदव घड ीवा तैड ी क नरँका ड ी जेन के घब त रँनरँ नेनथि , केहन  
गलेँन रिनेँन सन नगे छैक आरँ,कियो गमहव स थिड़की नोचनकेन्ह,किओ उमहव स  
दवरञ्जा,रँड ी के चहवदेरबी ठाहि पजेरँ पर्यत सरँ उघि ' न गेनय । लोक के  
लोक कहे छै जे रँन पुत के डीह रिनष्टि जय छै ,हुनक त पुत बहिते उजाड भ  
गेनन । खेत पथाव त अपन अपन रँचि नेनथि ,झुदा समिया के मकान , ओहिना



संभा राती धरि जेन म्हात तकेत ,नाँव रँहरैत ,के तकय एतौ घुञ्जवक दसो रँवथ  
स' । ओहू ठाँ के दूपहबिया ,बूढ़ प्रवान , की जुरानो' सरँ प्रवथा के गप्प ,दूबथा के  
गप्प ,संपत्ति रँठैरावा के गप्प ,बूढ़ नरँ के वास नीना के गप्प ,ठेव वास गप्प क  
सिडली प चढूँत उतरेत दिरस काँटि बहन छली । ओना आरँ ओहू ठाम ठीरी आरँ गैत  
छने,मदा रँसी कान रिजली कँठने बँहक,आ बहरौं करे तञ्जाओ एहेन गौष्टी के आनंद  
बूढ़ प्रवान के जेन भगरती के रँवदाने रँम् । प्रवान दिन के पाग्वर करैत हुनका  
सरँ के आँधि मे दोसरे चमक उँठि जाए । जोजो रँरँ के थिम्सा प  
कनिया त हसेत हसेत रँहान 'कोना हुनका लोक सरँ रँकनेन कहेहँ ओ रँताह ले  
घताह छनेथ,आरँथ अपन भाङ्ज स तँठै कवय आ भवि छैत मे आँगने आँगन घुमि  
क जनी जाति स ठाँ करैथ,किओ कहेहँ ,कनी एक ठाँ गीत सुनाडूँ ,आ ओ ओहि ठाम  
धूम्र स रँसि जायथ,घेँठि हिन हिन क ,आँध्रव नचा नचा क नचावी,कजरी ,त नुम्बरी  
गीत सुक कवि देख । सुन्नरो' केहेन,पाँच हाथ के धुरा,दप दप गोव ,भान प नान  
सिंदुवक ठोप ।

कानक प्रराह के त्रास रँनन कतरौं लोक गाम स उँपटि क सहव दिस भागो,गाम  
मे त लोकरँद बहरै कवते न । आरँ कीछ सहवि क भीड़ भाड़ स ,समस्या  
स ,रँरोजगावी स , गवाकष्ट कपीँशिन स , मशीनी जिनगी स उँरि क गाम सेहो आरँ  
बहन छथि । रिराहदान ,मूँडन उँपनेन ,एकादशी के जग ,पुजा हरन ,सरँ किछ त  
यथारत चनेत आरँ बहन छन,नरँ लोक उँसोह स जीरँ बहन छन ,प्रवना लोक सरँ  
हाकँत,थीनेत,भोथवायन , भसियायन बूँछि ,कमजोव ,ननखन,ननखन दृष्टि स देखि  
बहन छन ,नरँ जुग के ,आ अपन मनोरथा के ,कँठा के ,अचष्टी ,कचष्टी रँजि क  
निकारि जेत छन । कोनो एक थिम्सा प हुनका सरँ के हजाव थिम्सा मोन पडै  
। आ पचासो' रँवथ पहिन्नका रँठैथवा स आँजुकसमाज के तबाजू प तौनेत,केहन  
छुछ, केहन हीन,कतेक गहित नगेह ,से हुनके सरँहक आमो जनैक । देखियो  
रँरेन के रँष्टी के ,चतुवथी स पहिनहि रँव सर्ग , पदुरा के बिकसा प सिनेमा  
देखय मपरँनी जा बहन छन,त राँपे रँजनथिन “बिकसा स जेमए त फिल्म छुँटि  
जेतो ,चन, हम अपन मोठैवसायकिन स छोडि दैत छिओ,हमरो कोरँ जँरौ के  
अडिथ । आ रँजि क भवि पोथ हसली मनोजक माय । “ये रँहिन आ कोन  
अजग्वत गप्प कहनथिन , देखनथिन्ह ले चुन्नान के रँष्टी के ,राँपक रिराह कवाओन  
रँव के छोडि क अपन मन माफिक मनसा स दोसब रिराह कवि जेनके ,मा ओकब  
सेहो आरँ सीना चाकव कवि क रँजेत छै “ह त कोन जुन्नम  
केनके ,पियकूँड छने, ओप राँध कवि क मारे छने ,त ककरो दरंग ले उँठने हमब  
रँष्टी जेन आ ओ जौ ओकवा स पिँड छोडि । क पडायन त ,लोक क करेज मे किएक  
पाह उँठैत छैक । आरँ कहथुन' ।



कनिया के प्रविषा ओसावा दिस स आम बास्ता छन,त ओ सरँ ओहि ओसावा प नहि रैस क ओहि स सँन कोठवी मे रैसावी करेत छनी । कोठवी मे दु ठा थिङ्की ,एकठा पूरँ दिस ,एक ठा दछिन दिस । दू प थापा थापा पतवकी ,छाप रौनानुथा के पवदा नागन,ओकरो मोड्डी क किम्बो घुस्का दगथ,तखन ओहि राँठ स जाँ रँना लोक सरँ प नजबि सेहो बथथि,अ मनसा कोन गामक छे ,किनको कहुँ त नहि छैन,था जौ कोनो छैनक एहेन लोग नजबि पडि जाथिजिनका स थाना माना बहेह ,त हुनक जतवा भंगठारै लेन कागद ,रा आचरिक खुँ के रौती सन राँठ क ,नाक मे घुसा क जरेवदस्ती छीकन जाँ ,कस्तक रैव त थहि थपसहन स लोक सरँ थपस घुञ्जव जायथ, । था थहि स स्रृगिन सरँ के रँड प्रसन्नता होय । हुनक सरँक निक जका मोन रँहठ जाँ ।

भोकका तारा के देखि क दू गोष्टे उठि जायथ थपनथपन ओछोन प स ,नहा धो क ,भगरती नीप क ,पूजा पाठ के काज स जारेत निरृत होथि,तारेत सुबज् क चक्का एक रीत उपव श्रितिज मे ठंगा सरँ ठाम हुनकी मारेत बहेत छन । नरँका घबक उपवका मजिन के त्रीन मे रैसि दू गोष्टे स्तीन के गिनास मे चाह पीरैत कार छैन भवि के थरनोकन करैत छनी । रँहिन त थपन उमीव के रँडका हिम्सा सहरे मे काँने छनिह,थारँ न ग्राम रासिनी भेनिह,हुदा आदति सरँ दिन स काक रँजरी स पहिनहि उठरी के वही गेल छन । तहिया त थाप छिप पूजा करि क घिया पूता लेन जनथग ,पनपियाग रँनारँ मे जूँ जायथ,ओसरँ था पीरी क स्फुर जाय त कनिकार मे घवरँना के अँफिस जरी के समय भ जाँ ,हुनका गेला के रौद घबक मारु ,पोछा,रौली भवि कपड । धोरैत नीत दिन रौवह एक रौजि जाय । कहिओ ओ एक ठा नौकव रा काजरीनी नही बथली ,देहो भगरती के कीवपा स तंदुकस्त छन,था हाथो के रँड सकत,जखन दू पाय ककरो दैतथिन नहि ,तखन कियो हुनका ओत थपन हुँह रौहि क त नहि काज करिहेह । हुदा रहह रँहिन जखन मास के सोमा गाम थारैथ त थपन प्रविषा घबक पर्तग प चिभ पडन बहेत छनी ,काजरीनी सरँ काम कवरै करैक,हुनका जाँतय पिचय लेन एक नौडि फवाक स बाखन जाय ,जे हुनका नहारँ सोनारँय, नुथा कष्टा सेहो धोरँय ।

सहव जरी कार कनी कथु त मोनि मे थरस्र होएन ,हुदा ओहि सहवक नाम प त अ बाजसी ठाँठेठन छन ,अ सोचि थपन दियादिनी सरँ प उपेक्षा के दृष्टि, फेरैत तगाँ प रैसी क गाँडि पकडरी के लेन मधरँनी जाय छनिह ।

कातिकी पूर्णिमा के दिन दोसव गाम के देरी मदिब प भगरत कथा के भरा थयोजन छन । जगननाथजी स रिद्वान पीडित सरँ थायन छनेथ, कतेक दिन पहिनहि स प्रचाव भ बहन छन, लोक के उँसुकता हिय मे हिनकोव



मावय नागने । कहिया स नियावति नियावति गामक ठेव बास स्त्रीगण, प्रकथक सर्ग  
ओहो दुनु बिकसा प रैसि क नहा सुना क भोरे भोव रिदा भेन बहथि ।

सजोग देखियो जे ओ सरौ उमहव गेनथि, आ गमहव रैहिनक ह्नुम थारि  
गेनथिन, दुनु घबक कंडी मे नठकन ताना देखि क तेसव घबक दुबखा नग ठाढ़ ह्नुम  
के ह्नुमि क सुखागत कवरौ न्नेन ओ दवरैज्जा सुतह खुजि गेन बहे । भोजन  
भात कवि क पाछन कनी कान रिश्रीम कवय नगना त ह्नुक स्त्री घबक ओव भीतव  
पगस तेसवा घब स खनुबाग रैढ़रैय न्नेनखरुनाय नगनी । भांग  
भोजन छनथिन, गमहरे समधिष्योन मे थायन छनाह, त रैहिनो मोन पड़ि गेन छनेनह  
। ह्नुदा भोज के त नीक मौका हाथ नगने, नदि के खतीतक उद्यान मे भ्रमण  
कवरैके । ह्नुको ओ कहिओ कनिओ मोजव नै देने छनथिन, ततेक ग्मान छनेह ।  
आ तेसरो घब के थाय खपन पीव उगिनरौ के पवसव भेठने ।

आ थिम्सा के दोसवि छेव ह्नुमक चाक प गढ़रौ न्नेन उग्रत भ हव हव क  
रैहवायत गेन ।

तीनो हवीक मे, रैष्ट रैखवा त कहिया कत नै भ चूकन छन, कहे न्नेन त  
थारि दुगए हविक रैचना रैडका आ छोटका, ह्नुदा तेसव सभाव स प्रस्थान कवरौ स  
पुरि खपन स्त्री सर्ग एक ठा कंठिबरी सेहो छोटि गेन छनथि । ओहि गृडरुनिया  
दङ्गात प्रिया के कपाव देखि पित्री खपना ओत न गेनथि, खपन रैष्टी त नहि देनथी  
भगरती, एकरे पानरौ पौसरौ, पठायरौ निखायरौ, कन्यादान कवरौ, थारि माय के कतुरौ  
मोन छुष्टपठेनहि, सौस सेहो खुष्टा जका ठाढ़ भ गेनथि 'ओ थारौ के रैष्टी  
के गंदासनक पवी रैनरैय चाहेतछथी, आ थारौ छुष्ट के रिनाप कय बहन छी' । तखन  
सरहक रिचारे माय पी दुनु सहव चनि गेन छनिह । रैबस दिन प माय त थारि  
गेनी, थिम्सा के पेठैव न्नेन ह्नुदा रैष्टी के त स्त्र मे नाम निखा देन गेन बहे ।

माय के मोन जखन रैड छुष्टपठाय, त पौसठ ऑफिस स पौसठकार्ड मंगरौ क  
जोड़ि जाडि क निखनाय सुक करैथ त कनेत कनेत कतेक पहव रीत जाय ।

थरौन दुरौन प सिथुया टोथ, त मोसिरौत के मावत के, खपन बम्का कवय  
न्नेन रैसि कान जिह्वा प दुरिसा के रास

, कवारैगए पडेते छन । टोडि या साप के कप सेहो खख्र तियाव कवय न्नेन  
लोकरेद रौध कवि दैक ।

पान सन जीरौन पठाड सन दिन काठे न्नेन गाम घब मे लोक रैद के थकार नै  
बैहते छैक । पहिनुका जुग मे त गप्प सप्प सर्ग भाति भाति के काज रंधा सेहो



चनेक,रुमावि रैष्टी के बिराहक नेन सिका के मौनी रने ,गेकथा के थोर प जोड़ ।  
सुग्गा ,गुनारक हुन काहन जाए ,जनेहुं काठन जाए चवथा काठन जाय ,रुदा ताहिया  
राजाव घरे घब नहिं घुसन चन ,था ने चीनक सुंदव सुंदव समान एना लोकके मोहने  
छन , 'ए' के थांथि होइत अप्पन, राजाव मे एक स एक निक चीज भेष्टे छै'राजा  
प्रनयकावी राठि मे सरं किछु भासियाएन जा बहन खछि । थारं त रिशुफ गप्प ,नरंका  
शिक्षा के भूत ,गाम घबक लोक के कोढ़ी रना बहन खछि ,तखन थहिना कतेको  
थिम्सा के जग्य होइत छैक था सोइवीए स पाथि नगा ,रैद थिडकी ,दवरज्जा के  
थछैत खुजन थाकास मे उड्य नागेत छन । ओहि थिम्सा सरं मे कनिया के नां  
स सानन जिनगी के कतेक बास दूख बहे ,से कतेको लोक ने करेज मे रैबडी  
सन गइत बहनै ।

उपजा रौड ी त हुनकव ,जिनकव,समांग , खेत खबिहान छन ,हिनका त माव  
घड ीडा , था ओहो सारिकक घब ,रैडका रिशीत जे बहन होय ,रुदा भदरावि मे  
जानक थाहत ,कथनो गमहव स चुरे,कथनो उमहव स देरान थसि,था एकव मबन्मति  
कवरंय नेन कनिया के कतेको मास रैवस दिन धवि रैहिन के चिष्टी प चिष्टी पठाए  
पडै । तीन चावि रैवथ मे किओ सहवि स थारै,था जारैत ओकवा दूकसु करै,तारैत  
कोनो गुंव समझा ठाढ़ भ जाए । एक रैव त रैहिन गाम थारिं क सरंहक सोना मे  
हुनका रैड फज्मति केरकिन 'थहा त थहिठाम थवाम स रैंगसन थाय छी,थहाँ का  
रुंमरै सहव मे पैतराव न क बहे रना के कतेक फिबीशिनी स दू चावि होमए पडै  
छैक । थहाँ के रैष्टियो के जिम्नरावी हमी सरं उठेने छी ,तङ्गओ थहाँ टैन स हमवा  
सरं के नहि जीरं देरंय चहेत छी । हिनकव रैनडप्रेसव रैठिगेन छन्हि । हम त  
हुनका कोनो काज कहिते नहिं छिअन्ह, गिरे पडै छै घब त गिबय दियो ,रावह षी  
कोठवी छै ,जखन सरं थसि पडते ,तखन देखन जेतै' । ओहि रैव स ओ कतरौं  
कथुं होयन्हि, हुनका चिष्टी नैंग निखनथीह , 'रुंमन जे हमावा किओ नहिं खछि थहि  
ससाव मे' । था चारो कात स घब थसि क भुतहा हरेनी सन नागै, साने नानठैम  
जवाक' दवरज्जा प बाथि देख,जे थसन पजेरौ स राठ रैष्टेहिया के ठैस ने नागि  
जाय ।

थेरा पिरा नेन सान भवि के थल हुनके दिस स देन जाए ,था रौड ी नारड ी मे  
तीमन तबकावी त उपजिअ जाए । रुदा कनियो के अपनघवरौना स रैसि कोढ़  
रापक देन गहना गुबिया हाडै ,चंद्रहाव ,नथिया ,षीका ,कर्ण  
हुन ,राजा,थनत ,डरकस,पाजेरं , सरंषी त रैहिन रैक मे बथरारंय के नाम उतवरा  
नेने बहथि । रौद मे कथनो ओकव चर्च करैथ, त रैहिन के करौछु सन रौन स सम्पूर्ण  
देह मे थगि न्नेस दै "थारं गहना न क की कवरं ,नग मे बाथरं त ओहो डकुरा  
ब्रुगष्ट क न जायत,भने रैक मे बथन छैक' ।



खगहन मे रा माघ मे ,किसयातओ कोनो जाड्ने मास छत्र ,जखन रँहिन सपैतराव सहवि स गाम रँष्टा सरँहक उपनेन् कवरौ नेन गाम आयर छत्रिह । तहिया त गाम गामे छत्र आ छैने सेहो समस्त दुर्जा स सम्पन्न ,जन धन स सरँ डीह भवत । एके दुर्गा लोक गाम स रँहवाएत छत्र ,रूदा गामक मजगुत डोव ओकरा खाँचने बँह । मजगुया त रँवथ दिन पहिनहि स खहि शुभ दिन के ओविओनमे कोनहुक रँवद सन वाति दिन रँसवत नागत बहत छत्री । आँगन मे ओसावा सरँ प ओछाओत पठिया सरँ प पतियानी स बाखत बाहड्डी ,डुडेद केवार ,तीसी ,मड्डू ,आ ,मकङ्ग ,धान , सबिसरँ,आने की जतेक खन्न उपजा क रँष्टेदाव द जाङ्गत छत्र,मजगुया ओकरा खपना हिसरँ सगतने जा बहत छत्रिह,दाति दड्डवरौक तुसा सहित छोड्ने छत्रिह ,आ ओकरा कष्टकरौ नष्टकरौ क पौघ छोष्ट कोठी सरँ मे बखरँय छत्रिह । तखन एक दिन कनिया के मोनि मे खयनहि , उपनेन हेतेक,एतेक लोकरेद ,सब-कष्टम सरँ ओताह,तखन ओ मड्डरौ प चढी क रँकखा सरँ के की भाँख देतीह,हुनकव हाथ त ठन ठन गोपात । आ रँड्ड सोचि रिचावि क मवतिया रौनी पेष्टे दस सेव बाहड्डी ,दस सेव मकङ्ग ,पाँच सेव खेवही ,पाँच सेव केवार ,थोड्डे गद्धम ,थोड्डे धान रँचि नेनखी । कीछ पाय हाथ मे आरौ गेनह त छौओ रँकखा नेन गामे के सोनवरौ स सोनक गुँठी गड्डरौ नेनखि,ओहो मैना दीदी के नेहोवा पाती कवी क ।

आ सरँ कारौरौव त ततेक गुप्तु भेन बँह, जे घबक कोनो चाव प कोनो काव कोखा सेहो नहि रँसत छत्र,नहि कोनो कोन सानि मे नठिया,गीदड्ड रौ रँनड्डी ए नुकाएत

छत्र,रूदा तेयो आ गप्प जखन उजिअने,ओही घब मे रँड्डका लुङ्गकप त आरँिण गेन छत्र ।

जखन रँहिनक स्नामी रौध रौन दिस गेला खपन खेत पखाव देखय सुने,त कसियावक टोवि के दाग स रूजि पारँय नेन रौसेसव हुनका कान मे हुनके आँगनक कवनी फुगकी देनकेह ।

आँगन मे पाहुन पड्डकक आगमन प्राबन्तु त चूकर छत्रे,कनिया खपन कोठरी के पठ रँन कवि के कनेत बहनी । हुनकव छदवपन,हीनता,आ पापक पोथी नेने रँहिनक घवरौना ज़ाव ज़ाव स आँगन मे रौचि बहत छत्रेख “खही घब मे आरँ की ओथोन होयत ,जखन घरे मे मुस नागत खड्दि” । आ दुनु पवानी हुनक हाथ के छत्र पाङ्गन धवि नहि पिरौक सम्पथ खेनाह ,जखन कि तहिया सरँष्टा खेत पखाव समिअ बहेक ।

‘दसवथ के आँगनमा मे शुभ हो शुभे’ रँड्ड ज़ाव ज़ाव स होमय नागत,रूदा काकी शुभे कोना कहितथ , ।



उपनेन् के दिन सरै कष्टमक उपहास पूर्ण नजरि स रँचरौ के जेन ओ अपन कोठरी स नहि निकसन छनिह, तीन दिनक भुखन पीयासन, चाबीम दिन अनखन सँव मे छोटो रँकथा जेन रँनाओन गुँगी अपन सौसक हाथ मे बाधि पठि हब रँन क जेने बहथी । हिनको जिनगी स मोह कौन रँचन बहक, रँष्टी के पाव घाँठ नगरँय जेन भगरती छनिह । तखन स्वतरी बाति मे छुछ के नाज निहाज के तिनारँजनि दगत निकनि गेनी नरँकी पोखरि मे भसियारँय जेन । कनीध दुब प रँडरौ कोतरौन उधो रँष्टि देनकेन्ह ' कतय जाय छी मनकानि ? ' ओ की चीन्हने हेतेक ओकव आधि मे त बतौनी बहे, झुदा उज्जव नुखा देखि भेनय कोनो दाय कानी हेतिह, आ जौ चूडन हेते त तकरो कष्ट छन ओकवा नग । तही जेन कनी उचगव सब मे ओ रँजत छन, आ ओहि सब प नगे के दानान प स्वतन दिनेशिक आधि खुजि गेन छन, मान रँष्ट प आरि ओहो ठाँड भ गेना । किओ किछु ने रँजत आ ओ स्रत रँम्व पाविणी आगा पोखरि आ गाँडी दिस रँडरौत बहन छनी । नरँ शोषित दिनेशि पहिन रँव कोनो भूत रा चूडन के पछोड धेनक, सर्ग मे उधो मन रँठेनके । पोखरिक महाड प आरि ओ पनरँ क तकरनी, दोसब पहरि बाति मे आधा चान आकास मे चमेकि बहन छन, आ त कमतौन रँनी कानी छथिन, दिनेशि चोकिन, रँठेनक नरँमरँ फसाद स पुरखो सरँ पविचिते बहत छनाह । छपाक के सब स ओकवा सरँ मे चेतना आएन, आ हुनक पीठे प दिनेशि पानी मे डुनाग नगा देने बहक । पौड कि हुनका रँहव आनन, ओ त अचेत भेन । पहिन रँव गामक अतिहास मे एहेन थिसा भेन बहजे निसाबाति मे भगरति पानि मे डुरँन प्राणी के रँचा जेनथ । झुदा किओ ओहो रँजत छन, अखज ने मरँ, छुतहव ने फुँछे । रँहिन के डरो पहिनहि रँव भेनन । प्राण पवरी जेका पुरक पुरक कवय नागन छन, आय जौ किछु अथनाह भ जयते, रँठेनक लोक जिनगी भरि हुनके उपवाग दितेन्ह । दानान प रँसन नक नक उज्जव रुवता, साँची धोती आ रँडी पहिनने रोखारी मानिक के एक रँ अदृष्ट भय सेहो पङ्गस गेन छन । तहन निरँनक पछु मे उठन लोक क दया माया देखि दून रँकती कनिया के हाथ पधजोडि क शीत केने छनथी ।

रँष्टी के रिराह मे त एक रँ दमडि ने देरँ पडनेन्ह, झुदा झुगना प आधि त जौते देतनी, आ कन्याक रिराह कतरौ आदर्स हाँक, घबरँयाके त रँव तार' मे, दौड रँवहा करेअ पडने छैक, जेना गीध के पियान झुगन जानरँवक मौस प बहे छै तहिना कोनो कोनो नाथे हुनक रँखवा के जमीन जथा ओ अपन नाम प लिखरौ जेने बहथ, आ हुनका अहि सरँ नरँमरँ स झुज कवि देने छनेथ ।

कतेको रँवथ रँतने, रँहिनक सरँष्टी रँष्टी के रिराह दान भेनहि, सरँ अपन पेनराव रँठारँत आन आन सहरि मे जे गेना, से आपस झुडि क रँहिनक अरँकाव के रँवकत नहि होमय देनथिन, कोनो पुतौह हुनका अपन नरँष्टी प हाथ नेबाथय देनकेन । घब राना के विरँयव भेनोपवाति गाम मे अपन नरँ मकान रँना क बहय नागन छनिह, झुदा तखनो हुनक दोसरे पाह छनेह । कनिया के खसन घब के



मवन्मति कवरौ देन गेन छत्र ,रूदा ओकव मानिकाना हक रँहिनै सरँ के हाथ मे छत्र ।

कतेको रँवख रीमाव पड्ठी क मानिक जखन गोलोकरासी भेना ,रँहिन निताँत एसगकरा । कनिया के रँष्टी रँवस दू रँवस जेन माय के घुमारँए फिबारँय ने न जायन्ह,सरँष्टी तीर्थ सेहो कवरौ देनकेन्ह । देखि देखि क हूनक कोढ़ फाड़ुन्ह,थाय धरि त ओ दुनिए दारी मे बही गेन छत्रथी,आरँ त कोनो रँष्टे ने हूनकि मारे आरँ ,ह कहिओ कान होन हान कवि नेअ त समिने रूदा ओहो आरँ ने खारी रँजरेँ तोही आरँी जँ ,जखन अपन कोथिक जनमन खान त गेन त खान क जनमन के किए गावि सराप दगतथी, कहरीओ छै जे जहन रँहै नगतौ कान तखन माय हेतोँ खान । पौसने त रेह ओहि रँष्टी के बहथी,रूदा कतेक सिनेह स से हूनक खामो जनैत बरँहै ।

जखन रँहिन रिद्धत भ क कनेथ, हिन्मत जूष्टी क कनिया हूनका नग एनाय सूक कबी देनथी,आ नहुँ नहुँ रँहिनक खेनाय पिनाय के भाव हूनका रँिन पुद्धने कनिया अपना माथ प बाथि जेनथी । आरँ त खूनक बिस्तु सेहो एहेन ने हेते ,आप आप मिन क एक भ जाय छै ,नदी आ नार ,खान्हव आ नाठी ,डाँन आ बस्ती ,तहिना रँहिन आ कनिया,एक दोसबक जिरौक सहावा रँनी गेन छत्रथी ।

ई कनापव अपन मँतर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पव पठाउ ।

‘सगव बाति दीप जवय क १७ म आयोजन ‘कथा कोसी डमेशी पासरानक संयोजकत्रमे ँबहामे सम्पन्न/ +० म सगव बाति दीप जवय सुपौल जिराक



निर्मलीमे डमेशी मण्डनक संयोजकत्रमे बिपोर्ष पुनम मन्दन

सगव बाति दीप जवय क 79म आयोजन ‘कथा कोसी नामक रँिनबक नीचाँ दिनकि 15 जून संध्या 6.30 रँजेसँ शुक भ२ 16 जूनक भिनसब 6 रँजे धरि लौकही थाना खन्तछात ँबहा गामक मध्य रिद्यालयक नर निर्मित भवनमे श्री डमेशी पासरानक संयोजकत्रमे गोष्ठी सम्पन्न भेन । खणिना +०म गोष्ठी सुपौल जिराक निर्मलीमे हेरौक नेन डमेशी मण्डन प्रस्तार आधन जे सरँसन्मतिसँ मान्य भ२ घोषित भेन ।





श्री जगदीश प्रसाद मण्डल एवं श्री वामचन्द्र पासरान जीक सहकृत  
अध्यक्षतामे तथा श्री रीरेन्द्र कुमार यादव आ श्री दुर्गागान्द मण्डलक सहकृत  
संचालनमे ई कथा गोष्ठीक भवि वातिक यात्रा भेल । गोष्ठीक शुभावम्भ श्री  
वक्त्रमी नारायण सिंह एवं श्री वामचन्द्र पासरानजी सहकृत कपे दीप प्रज्वलित कइ  
उद्घाटन केननि ।

बिदेह-सदेह-5 बिदेह मेथिली रिहनि कथा, बिदेह सदेह-6 बिदेह मेथिली  
वक्त्रकथा, बिदेह-सदेह-7 बिदेह मेथिली पद्य, बिदेह-सदेह-8 बिदेह मेथिली नाँठ



उत्सव, बिदेह-सदेह-9 बिदेह मैथिली शिशु उत्सव तथा बिदेह-सदेह-10 बिदेह मैथिली प्ररंभ-निरंभ-समालोचना नामक पौथीक लोकार्पण स्थानीय बिद्वतजन श्री संजय कुमार सिंह, श्री वामचन्द्र पासरान, श्री मिथिलेश सिंह, श्री बाजुदेव मण्डल, श्री लक्ष्मी नारायण यादव तथा श्री वीरेन्द्र प्रसाद सिंह द्वारा भेल हाथे भेल ।

लोकार्पण सत्रक पछाति दु-शरदक एकठा महतरपूर्ण सत्रक सेहो आयोजन भेल जगमे श्री वामचन्द्र पासरान, श्री रेंचन ठाकुर, श्री कपिलेश्वर बाउत, श्री कमलेश्वर झा, श्री बाजुदेव मण्डल, श्री वाम रिलास साहू, श्री उमेश्वर नारायण कर्ण, श्री वामानन्द झा 'वमण', श्री शंभु सौबल, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, डा शिरकुमार प्रसाद, हेम नारायण साहू, श्री अक्षय सौबल तथा श्री उमेश्वर मण्डल तथा संयोजक श्री उमेश्वर पासरान द्वारा 'सगव बाति दीप ज्वर' कथा गोष्ठीक दीर्घ यात्रा तथा उदसपव सभागावमे उपस्थित दुब-दुबसँ आधर कथाकार, समीक्षक-आलोचक एरं स्थानीय साहित्य प्रेमीक मध्य मर्चसँ अपन-अपन मनतरय बखनि । जगमे सगव बातिक 75म आयोजनक पश्चात 76म आयोजन जे श्री देवशेखर नरैन दिवलीमे करेराक घोषणा तँ केने बहनि झुदा से नै कवा साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कथा गोष्ठीकेँ गनि नेने बहनि जइ गिनतीकेँ सोमवारोत गेल आ तँ ए ई गोष्ठीकेँ श्री उमेश्वर पासरान अपन गमानक पबिच दैत १७ म गोष्ठीक आयोजन केननि । ओ कहनि जे हम सब अर्थात् बिदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनसँ जुड़न मैथिली बिकास प्रेमी छी । हम सब ११म, १२ म आयोजनक आयोजन कर्ताकेँ स्पष्ट रूपे कहत एबनि जे झुदा हमवा सरहक रात नहिसेँ रिभावानी माननि आ नहिसेँ कमलेश्वर झा माननि । झुदा से हमरुँ नै मानर आ सही-सही गिनती कवर । आ तही दुआरे ई गोष्ठीक आयोजन १७मे आयोजन तँ भेल, आयोजित भेल । हनाकि दवर्तगसँ आधर कथाकार श्री वीरेन्द्र कुमार नामक उकसेना पव बहुआसँ आधर श्री रिनय मोहन झा जगदीश, श्री दुधमोहन झा आ दवर्तगसँ आधर श्री अशोक कुमार मेहता वीरेन्द्र नामक सर्ग गोष्ठीक आवम्बक घण्टा भविक पछाति चलि जाग गेला ।

जीरिते नर्क (उमेश्वर मण्डल), शिक्षाक महत (वाम रिलास साहू), रिआहक पहिल गिवर (दुर्गानन्द मण्डल), रौका डाँड (लक्ष्मी दास), रंशि (कपिलेश्वर बाउत), शरणीक राँस (वाम देव प्रसाद मण्डल 'नाकदाव'), सगतोवनी (शिरकुमार मिश्र), पाखव, पियरुव, जोगाव आ अंश्रेज नैना (अमीत मिश्र), संत आकि चर्च (रेंचन ठाकुर), अछोपक छाप (शंभु सौबल), नमोनागष्टिस (उमेश्वर नारायण कर्ण), द्वादशी (सुभाष चन्द्र 'सिनेही'), बाँडनि (रोशिन कुमार 'मैथिल'), पँचरेदी (अखिलेश्वर कुमार मण्डल), झुगरो रिसेरनि (जगदीश प्रसाद मण्डल) अत्यादि महतरपूर्ण नघु कथा/बिहन कथाक पाठ भेल आ सत्रे-सत्र मौरिक शिपुषणी आ समीक्षा भेल ।



खड्डोपक छाप (शिम्लु सौबल) क समीक्षक क्रममे श्री वमानन्द ना "बमण" कथारसुसँ खपन असहमति देखेननि आ कहननि- " नै आरँ ग गप नै खड्डि, एकठौ गप एते देथियो, हम वमानन्द ना "बमण" श्राविय उच कनक, आ कतह आएन छी । उमेशे पासरानक दवरँज्जापव । " श्री रैचन ठारुव श्री वमानन्द ना "बमण"क नर-ब्राह्मणरादी सोचक विरोध करैत कहननि- " लोकक मगजमे खखनो जाति-पाति भवन छै, मैलोरवगक प्रकाशि ना तै नै कठ छथि जे रैचन ठारुव भवि दिन तँ केशे काष्ठैत बहए, ग वगमच की कवत । । श्रीधरमकेँ सेहो ग गप बुनन छन्हि । माने मैथिली साहित्यकाव, समीक्षक आ वगमचसँ जुडन ब्राह्मणरादी आ नर-ब्राह्मणरादी सोचक लोककेँ देखैत ग कहन जा सकैए । २५मे शिताछीमे श्री वमानन्द ना "बमण"क रँयान ग देखैत खड्डि जे काना ओ उमेशे पासरानक दवरँज्जापव आरँ उपद्रत कवरँक भारनासँ ग्रसित छथि ।

ई खरसव पव २१ म रिदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनी सेहो आयोजित भेल । खगिला +०म गोष्ठी सुपौर जिलाक निर्मलीमे हेरक लेन उमेशे मण्डन प्रस्तार आएन जे सरसम्प्रतिसँ मान्य भइ घोषित भेल ।

ई कनापव खपन मतर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पव पठाड ।



रिन्दुशिव ठारुव

रिहनि कथा

१

न्याय

सून जागत कान एकठौ नडकीकेँ ओहे गामक झुथियाक रैषेण खपना हरसक शिकाव रँना लेनक । ग घणना सुननाक रौद सुनिया छैड । सब ओकवा रँड पिठनके । ई घणनासँ हुनकव रौरुजीकेँ खपन पगवी खसराक भान भेलै आ खपन रैषेणक कवतुतपव पर्दा देरक लेन पशायत नै कवरँक घोषणा केनक । झुथियाक एहन पम्कपात देखि पूवा समाज मिनि कइ एक निर्णय केनक जे न्याय आथिव न्याय होग छै । आ सबक साथ उचित न्याय हएरँ खरथक छै, चाहे ओ बाजा हुंखए या प्रजा । तै पशायत हेरक चाही तथा दोषीकेँ कर्म खरसाव उचित सजाय भैरँक चाही । समाजक आगु झुथियाक कानो रँस नै चनलै । ओ पशायत कवरँक लेन विरशि भइ गेल । दोसव



दिन भोरे पञ्चायत रैसन खा उचित ग्याय भेल ।

२

### खामेग्लानि

कान्हि दिरानी पारनि । सभ गौष्टे दिरानीक तैयाबीमे जुष्टन । हबीयाक हाथ कष्ठा गेल छै तै हुनकव पनी आरथक समान नेन रँजाव दिस ँहनन । पाछ-पाछ हुनकव रँष्टा सेहो । हबीयाक पबिराव रँड गबीरँ छै । दुकानमे पुजा, खावती खा प्रसादी नेरौक म्फमता ने छनि हुनका सभ नग । झुदा समाजमे नाक रँचेरौक हेतु एकष्ठा खगवरँती, खरीव, चन्दन खा पातवि नहु खविदकक झुशिकनसँ । तगपव सँ हुनकव रँचरा हुकानोती खा ह्फका नेन रँहाडा तोड्ठ नागन । पेसा तँ ने बहए ओकवा नग से नञ्छ द किन देते । दुकनदावसँ रिनती केनक तँ ओ कहकक - "पेछना नम्फापुजाक पेसा सभ रौकिए छै आ हेव कतेक खानी उधावि दैत बहियो । "दुकनदावक रौत सुनि क२ छपवारानी तँ नजेनी जकाँ नाजसँ घोकैच गेल । ओम्ब दौसव लोक सभकेँ सामाग्री किननाग आ रौत-रँचा नेन ह्फका किननाग देखि क२ छपवारानीक आँथिसँ श्रिरन नोव रँह२ नगले आ अपन गबीरीपव रँड खामेग्लानी भेले ।

३

### खतिशोप

चौकिएपव सँ काकी कह छथिन, "रौरा एम्हरे खाड । "

काकीक पिड एन सुव सुनि बमलोचना चौकी दिस रँढन झुदा आशनि सुन । चाक दिस रँस कनारोहठ । ओ समयि ने परँनथि ँ पबिरेशिके । आ काकी सहजेसँ रँतारँ नेन बाजी ने होएथिन । । तखन ओ कहथिन- "काकी, काी भेल सभ-सभ रँतारँ, खहाँकेँ हमव सपत भेल । "

काकी आँचवसँ अपन नोव पोछेत सम्वदनशील भ२ रँजनि- "काी कछु रौरा, खनर्थ भ२ गेलै । रँचिकेँ रिराहक ओ महिना ने भेल छले झुदा नवपिशीच सभ उनका डुपव खग्याय क२ देनके । दहेजक किछ ँका रौकी बहि गेल छले, से तगसँ ओकवा मष्ठी-तेन ध२ जिन्द जवा देनकेँ ओकव सासुव सभ । कतेको रँव ँ ँका नेन तडाड-मछाड भेल वँह झुदा हम सभ जन्दिए रँरँस्था क२ द२ देरँ, से आश्रिसन देनाक रँरँजूदो ओ दानर सभ हमवा रँष्टीक साथ एहन कर्म केनक । रँजवखसुरा पुनिसकेँ थानामे विपोष्ट निखारँ गेलौ तँ मचकरा ओकरो सभकेँ शायद पेसेपव मिना नेनके । एखन धवि किछ निवाकवण ने भेलेए । " काकी रँजेते-रँजेते रँहोस भ२ गेलीह ।

बमलोचना काकीकेँ सम्वारेत सोटे छै, समाजक एहन खतिशोप आ कर्मकावक रँारेमे । जकवा चपेष्टामे कतेको धिया-रँसेनी रँनिदान होग छै ।



ई बचनापब अपन मतर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पब पठाउ ।



जगदीश प्रसाद मंडव

वयुकथा-

छप्पा पाव

गोसाँग ब्रुक-मूका गेल । ओना छह रँजि गेल झुदा सुकज अपन दिनक यात्राक अंतिम पड़ारपब अँष्टिक तकिते दुना । पतवाएन काज बहने नीरकँठ काका सरैबे-सकार निचन भ२ गेल दुना । जहिना परिवार मोठेनासँ काजो मेष्ठाग छै आ दूरबेनासँ काजो दूरबाग छै तहिना नीरकँठ कक्काकेँ सेहो भेलनि । ओना परिवारक सँस्कार आगु रँठनि झुदा काज पुबने काजो पतवागए । होगतो तँ तहिना ने छै जे जनम होगते सँस्कारक जनम होग छै आ अन्त होगत अन्ता होग छै । नीरकँठ कक्काकेँ तेहने सन भेलनि । किअ ने हेतनि, सोमने नगीसँ घास खुनासँ ने ने होग छै जे आगु ताकरँ दादा-पवदादा देखरँ आ पाछु ताकरँ तँ नाति-छेड़नाति देखरँ । रौर-रँचाक रिखाह-दान भेने माए-रौपक जिनगीक प्रकथ कर्म-धर्मक पूर्ति होग छै जेसँ रौर-रँचाक अपन दायित्व पूर्ति करै छथि । रँठा रिखाहक आग पनबहम दिन छेलनि । पैघ यत्नसँ दूनु पवानी झुजि पारि जहिना सारुनसँ रमक मैल साह कएन जागए तहिना माए-रौपसँ न२ क२ रँठा-रँठाक परिवार रँना जिनगी मैलकेँ कर्मक सारुनसँ घोष अपन मनक सहाग लोक करै छथि । नीरकँठ कक्काक मनमे उठनि जे रँठा-रिखाहक अंतिम हिसारँ जोड़ा किअ ने काजक रिसर्जन कए नी । आरँ कि कोनो ओ जूग-जमाना बहर जे तीन-तीन-चाबि-चाबि मास गवदिनेमे उतबी मूदिने बहर । जे काज महज चाबि-पाँच घण्टाक छी । मन गराही देलनि जे से ने तँ आग अंतिम हिसारँ -रिखाहक नाभ-हानिक- क२ काजक रिसर्जन कए नरँ । जहिना रौनेया हबिषक रँचा पकड़ गते चाककात चोकला हूअ नगैत तहिना नीरकँठ कक्काकेँ भेलनि । काजसँ रिश्याम होगते देखि सुचिता काकी हाँग-हाँग अपन काजक झुड़ी मोड़ा चाहक ओबियानक रिचाव मनमे अननि । किअ ने अत, ओहन जमाना थोड़े छथि जे पतिक रिकनात देखि ओसँ रँसी अपने रिकनातता देखरँ नगती ।



केतली-लौठा नेने कर दिस रँठनी, मनमे उठनि पहिने खपने हाँग-हाँग पएव धोएग लौठा-केतली खखाड़रँ खाकि लौठे केठनी खखाड़ा पानि भवि नेरँ । मन ततमत कबए नगनि, ओना ई उमेवक ग़ा प्रश्न नै भेन, झुदा हव-काजक खपन गति-रिधि छै । खपने जिनगीक काज ने दोसवारकेँ रँष्ट देखोत । समेसँ पहिने स्रुचिता काकी चाह रँना दहिना हाथे गिनास नेने नीरकँठ काका नग पहुँचनी । खथनि धवि नीरकँठ काका झुड ी निछ झुठेँ केने छुना । मनमे रँष्टा रिखाहक काज घुबियागत बहनि । चाहक गिनास जखनि स्रुचिता काकी निछ दरँ रँठ नीरकनि तखनि खाँथि पड़ा ते काका नजवि उठोनि । भ्रुखाएन झुहक स्वखी देखि नजवि-पव-नजवि गड़ोनि । झुदा कक्काक मन खपन रिचावपव बहनि । काकीकेँ रूमि पड़नि जे भविसक कोनो दरँ कएन काज मनकेँ पकड़ने छुन्हि । झुदा जँ चाह पीरैसँ पहिने रँजि रँत नाडरँ तँ भ२ सकैए जे चाह पीरँ छोड़ा खपने रँथासँ रँथित भ२ जाथि, तगसँ नीक जे चुपचाप हाथमे चाहक गिनास पकड़ १, खपनो चाह खंगनसँ खानि एते पीरौ कवरँ खा प्रुछियो नेरँनि । तग रँच दु-चावि छोष्ट चाहो छोष्टि नेने बहता जगसँ मनोक जूखावि कमतनि । ओना उदासो चेहवाक केते कावणो खुछि । केतो रौद-रँसातक उदासी तँ केतो कोनो काज नै भेने, केतो परिश्रमक नोकसानक उदासी, केतो धीया-पुता झुगने उदासी तँ केतो माए-रँप झुगने । झुदा तँए कि पतिक रँथा पनी नै सुनथि । पति-पनीक रँच हजारो कप खुछि हजारो वंग खुछि तँए कि रँजा-लुका रँन भ२ जग । खंगन दिस स्रुचिता काकी रँठनी । एक छोष्ट चाह पीरिते नीरकँठ कक्काक झुह झुसिकिअनि । मनमे उचवनि, कहु जे एहेन काजकेँ कि कहरेँ काज छेवनि डेट सए जोड़ धोती खा तेकव खारो सगी सभ माने पाँचो धूक कपड़ १ सग रिदाग कवरँ । ओना डेट सए रँहूत भेन झुदा से नै, खज-गज रँना परिवार कक्काक । चावि भाँगक खपन भैयाबी, तेकव नैहव-सासुव, नाति-नातिक, पोता-पोतासँ व२ क२ खपन सासुवक सातो सरँनधीक, तग सग रँष्टक हागसुकन-कोनेजक सगीक सग नोकवीक सगी धवि । नीरकँठ काका छुदए खोति काज केवनि । प्रश्न तँ मनमे उठनि झुदा नगने जरारँ भेष्टनि जे जग-जापमे खर्च होगते छै । जँ से नै होए तँ धनक काजे कि बहत । पेष्ट तँ सागो खा एक लौठा पानियोसँ मानियोँ जाग छै । मन नचिते बहनि खाकि स्रुचिता काकी झुहमे चाहक गिनास बिरोने खगुमे रँसनी । तही रँच नीरकँठ काका खपन हाथक गिनास चोकीपव बाथि हाथक पाँचो गुंगवी घुमरँत रँजना-

“ कह ते ग़ा केहेन भेन ? ”

नीरकँठ कक्काक प्रश्न सुनि स्रुचिता काकी खकचागते बहनी जे कि केहेन भेन । रँघ भेन कि साँप भेन से केना रूमरँ । ओना दनु पवानीक -नीरकँठ काका खा स्रुचिता काकी- मन रँष्टा रिखाहसँ एते खुशि बहनि जे छोष्ट-छीन केते रँतो खा काजो मनसँ हष्टि गेन बहनि झुदा मनोक तँ खपन सँसाव छै । प्रसंगोक खपन स्थानो खा महत्ता

छुगहे । दूनु रैकतीक समयया काज तँए थारो रैसी मन खुशी बहनि । खुशी हएरँ  
 उचितो छन किएक तँ केतो एहनो होग छे जे प्रेमबस पीरँ, मधुव गीत गारि सतान  
 पैदा होग छे आ किछुए दिन पछाति सब किछु उनए जग छे, ओग रैषीसँ तँ नीक  
 काज भेले बहनि । ओना चाबि भाए-रहिनक रीच एकेषी रैषी तीनषी रैषीए छेननि ।  
 जे तीनु रैषी-रैषीसँ जेठे छेननि जेकब रिखाह-दुवागमन पहिने क२ नेने छना ।  
 तीनु रैषी रिखाहक दान-दहेज देखि दान-दहेजसँ मने उचष्टि गेननि, जगसँ रैषीक  
 प्रति दान-दहेजक रिचारे मनमे दरि गेननि । दोसरो काबि भेननि, एक-एक रैषीक  
 रिखाहमे जेते खर्च भेल तगसँ रैसी जँ रैषीरनारके खर्च कबएरँ ए तँ सोमना-  
 सोमनी खगाय भेल । झुदा से कहाँ होग छे, दहेजक दुखारे रैषी रिखाहके लोक  
 खगव-मगव करैत षपि जागए झुदा रैषी रैबमे रिनु पठनो-निखनके डाकठब-  
 गंजीनियब रना देल जागए । जहिना रँडदहङ्गामे हुसि-फासिक तेजी बह छे तहिना  
 ने रैषी-रैषीक रिखाहमे... । यत्र सन परिव सुनमे जँ हुसि-फासिक तेजी ने बहत  
 तँ ओ यत्र शुद्ध केना भेल ? खैब जे होग । जेते तीनु रैषीक रिखाहमे खर्च  
 भेल ओते खामद एकषीमे केना हएत । तगसँ नीक जे झुहछोहनिये ने कबरँ ।  
 हथुठाग जे हेतग सह हेते । पतिक रिपषी रानि -हाथक गुगरी घुमा रँजेत-  
 देखि सुचिता काकीके हसी नगननि झुदा हसरौ तँ हसरौ छी । केतो ग्दग्दरैए तँ  
 केतो भकभकेरौ करैए । काज नहगव बहन घण्टा नहे रूमाए छे आ घण्टगव बहन  
 तँ नहो घण्ट रूमाए छे । पखड एत केवाडक लुञ्जा जकाँ सुचिता काकीक दाँत तब  
 नीनकठ कक्काक खाफाशि पडननि । झुदा खाफाशो तँ खाफाशो छी, कथिक खाफाशि । तँए  
 जारै उधाबि-उधाबि ने रँजता तारै रूमरँ केना ? झुदा झुहक हसी पेठमे ग्वरुनियाँ  
 कष्टते बहनि । रँजनी-

“ तेहेन माँपि-तोपि रँजे छी जे उपर-घाँडे बहि गेलौं तँए कनी रिक्छा क२  
 रँजिओ । जखनि दूनु गोठेक समयया जीरन अछि तखनि हम हसी आ थहाँ कानी ए  
 केहेन हएत ? ”

थिम्सकबकेँ जहिना एकाँषी थिम्सा सुनिनिहाव भेठना पछाति अपन सुधि-रूपि हवा जाए  
 छे तहिना नीनकठ कक्काकेँ सुचितक रौन सुनि भेननि रँजना-

“ परिवारक महान यत्र रैषी-रैषीक रिखाह छी, तेहेन यत्र जँ नीक जकाँ सम्पन भ२  
 जाए तँ खुशीक रीत भेल । तगने देहोक धौजनि आ पागयोक धौजनि तँ हेरै  
 कबत । झुदा तगमे उचित-अनुचितक तँ रिचार कबए पडत किने ? ”

नीनकठ कक्काक मनकेँ पकडत चूँषी सुचिता काकी भिडौननि । हुँकारी भरैत  
 रँजनी-

“ ईमे के ने कबत ? ”



जहिना एक्क भगरान भिन्न-भिन्न झुकप भिन्न-भिन्न हुन-पत्री पारिं खुशी होगछ तहिना नीनकठ कक्काकेँ सेहो भेननि । स्रचिता काकी नजबि-पब-नजिब गड । रँजना-

“ उचित-अनुचित रँड एरँ खसान खडि । जिनगीक सर्गी बहने कि हएत ? ए तँ रिचावक सर्गी भेने ने काज चनत । ”

नीनकठ कक्काक रात स्रचिता काकीकेँ अकठागन लगननि । मनमे उठननि जे कछु सब दिन एकठाम बहि सब किछु करै छी तखनि एना किखए रँजे छथि । भबिसक कोनो एहेन उकड़ु सोग ने तँ मनकेँ पकड़ि नेने छन्हि । खान दिन केहेन रँटा याँ हरँगरँ करै छेलौं खा खाग कि भइ गेल छन्हि । रँजनी-

“ कनी नीक जकाँ अपन उदासीक कावण रँजिओ । हम डुपर-नापर बहि गेल छी । ”

स्रचिता काकी जित्नासा देखि नीनकठ काका रँजना-

“ उचित-अनुचित काजक दु छेब भेल । एक छेब उचित भेल खा दोसब अनुचित । झुदा तगसँ थोड़े काज चनत । सुत-सुत मिति जहिना डोबी रँनेए तहिना दुनु खडि । तेकवा रिहिया कइ जँ ने सीमा देरँ तँ काजे भँसिया जाएत । बुनरँ ने कवरँ जे कतए कि भइ गेलै । पछाति रँजरँ जे मनमे जे छेलै से भेरँ ने कएन । खही कछु जे मनक रिचावकेँ ने काज कप रँना केनिई तखनि किखए ने भेल ? ”

नीनकठ कक्काक रिचाव स्रचितो काकीकेँ दमगब बुनि पड़ननि । माथ रुड़ि यरँेत रँजनी-

“ तखनि केना हएत ? ”

स्रचिता काकीक पघिनन मन देखि नीनकठ काका रँजना-

“ रँड भावी जान छै । हुनरावीक हुनमे देखरँ जे एके नामक अपवाजित हुन उजरौ होगए नानो होगए खा काबीओ होगए । सोमने अपवाजित खाकि खाने हुन जे बंग-बंगक होगए, कहनासँ थोड़े बुनि पेरँ जे नान-काबीमे कोन-नीक कोन-अधना भेल ? ”

नीनकठ कक्काक छिड़ि याएन रिचाव सुनि स्रचिता काकी समठैत रँजनी-

“ अछा छोड़ु एते छान-पगहाकेँ । एक-एक काजकेँ उठा रँडरँेत चनु जे कि नीक-भेल खाकि अधना भेल । ”





पनीक रिचाव सनि नीरकंठ काका रँजना-

“ है, रँडरँटा याँ रिचाव देनौं। झुदा पहिने अ कहि दिख जे केते काज अठनौ पछाति करै छी आ केते अपने फुडने करै छी ? ”

पतिक राँत सनि स्रुचिता काकी अकरँका गेली। मने-मने रिचारे लगली जे अ कि भेन ? एकवा कि काज कवरँ नै कहँरै। घब-पबिरावक जखनि काज भगए गेल तखनि काज केना नै भेन। भबिसक बुँषिये तँ नै घुसुकि गेलनि अछि, नै तँ एहेन रिनु हाथ-पएवक रौर किअए भेननि ? अक्कठा राँतमे सेहो मानरँ उचित नै हएत। जँ मन घुसकन-फुसकन हेतनि तँ दोसरौ-तेसरौ राँत एहेन रँजता। ओना लोककेँ रौरौ-रिपति आ काजो-उदममे मन घुसुकि-फुसुकि जाग छै। आशिक कपमे की अ मुँठ जे किछु सबकारीओ कर्मचारी रा शिक्षकोकेँ रौरैक रिखाह सेहो पतित रँनौनकनि। पबिस्रुतियो बहन जे केते शिक्षक हाग सुन रा कौरैजसँ सेरा-निरुत भए गेलौ झुदा हाथसँ कहियो रेतन नै उठौननि। झुदा तँए कि पबिरावमे खर्च नै छेननि, एक शिक्षक रा कर्मचारीक खर्च तँ छेननिहँ। मनकेँ खीब करैत स्रुचिता काकी रिचावनि जे से नै तँ जे बुँनेमे नै आएन से प्रुछिअ किअए नै नी रँजनी-

“ कि कहनिअँ अठनौतव आ अपने फुडने ? ”

स्रुचिता काकीक प्रुण सनि नीरकंठ कक्काक मनमे उपकननि, भवि दिनक हवाएन जँ साँनो घड़ा घब पँच जाए तँ ओ हवाएरँ नै भेन। दिन तँ होगते छै रौरैआगने तखनि रौरैआएरँ हवाएरँ केना भेन। रँजना-

“ जखनि कोनो काज अठनौ पछाति जे करैए ओ अपन उहिक नै भेन। जँ ओकवा अठ एन नै जाए तखनि ओ कवत कि ? अही कछु ? ”

नीरकंठ कक्काक रिचाव सनि माथक मोष्ठा पँठकेत स्रुचिता काकी रँजनी-

“ अहाँ अपनारँकेँ एतरँ किअए बुँने छिअ जे हमवा कोनो काज करैने नै कहँर। जँ से नै कहँर तँ केना बुँनरँ जे हमव राँत हँली मानैए आकि नै ? ”

पाशा पनष्टैत नीरकंठ कक्काक रँजना-

“ जड़ा सँ छीप धबिक काजक हिसारँ-कितारँ करैमे रँड समए लगत। से नै तँ अक्कठा काजक हिसारँ कक। ”

अकठा सनि स्रुचिता काकीक मन हनचनेननि। अ तँ सोनहली एक तबहा भेन ओंगता क२ रँजनी-



“अच्छूक रात बहन आ एकठा हमरो अछि ।”

“से का ?”

“सरारी रबियातीक हिसारसँ होग छै तगमे एते गाड़ीक कोन प्रयोजन छेलै, जे नर गेलौ ?”

सुचिता काकीक प्रश्न सुनि नीलकंठ काका रँजनी-

“अछा, अही रिचाव दिख जे पहिने कि रिचावर ?”

पतिक शीतल ढाहवि पारि काकी रँजनी-

“पहिने गाड़ी-सरारीक रिचाव कक । किअ पचीसठा गाड़ी नर गेलिअ, जखनि कि डेबहे सभ रबियाती गेलिअ ।”

गाड़ीक नाँ सुनि समाजमे जीतक अन्तर नीलकंठ कक्काकेँ भेलनि । अखनि धरि समाजमे कियो रीसठा गाड़ीसँ आगु नै रँठन छना तैठाम पाँच गाड़ी रँठक प्रतिष्ठा केकवा भैठन । आह्लादित होगत रँजनी-

“अपन मनोबथ छन जे आगु रँठा काज कवी । किअ अहाँकेँ कोनो तेकव दुख अछि ? प्रतिष्ठा कि हूँठा कन भेल आकि सम्मिलिते भेल ।”

एक तँ ओहिना सुचिता काकीक मन रँठै रिखाहक खुशीसँ उषियागत बहनि तैपव पतिक मनोबथ सुनि आरो उषिया गेलनि । रँजनी-

“अनकासँ तँ नीक काज जकव भेल । देखै छिअ जे अक्खक रौवा जकाँ मनुख गाड़ीमे ठसमठस रबियाती जाग-अरैए आ गाड़ीएमे अँह पेँठ सभ चनए नगै छै । तगसँ नीक भेल जे जे कियो गेना खवामसँ एना-गेना ।”

सुचिता काकीक रौन सुनि नीलकंठ कक्काक अँहसँ हँसी हूँठनि । पतिक हँसी देखि काकीकेँ भेलनि जे भविसक हवनि निशान उचित जगहपव नगनि । अपन रँवाग सुनि खुशी हएर मनुखक जगजगत संस्कार बहन अछि । अपन उचित जगहक निशानसँ पतिक अँहकेँ नारी जकाँ हँसाएर सहरन पनीक प्रश्न नक्कण तँ भेरै कएन । अदा नीलकंठ कक्काक हँसीक कावण सुचिता काकीक निशान नै रँकि समाजमे खवामदेह रँसी गाड़ीकेँ रँठैक रिखाहक रबियातीमे नर जाएर छेलनि । जेकवा रँठैकेँ अधिक दान-दहेज रिखाहमे भैठै छै, समाजमे ओकरे मान भेल कि नै ? जँ मान रँठन तँ जकव अँहको रँठन हेरै कवत । पेँठक गृदगृदी अखिव होगते सुचिता काकी रँजनी-



“आर, हाँ-हाँ ही-ही छोड़ू । भानसोक रैब भेल जागए । अखनि प्रतोहकेँ चल्कि  
भाव थोड़े देरै । जग रैथे रैथाएत छी से रैथा निकानू । जारै ग्व घाड जकाँ  
कोनो रैथारै नीक जकाँ नै निकानि रैहा जेर तारै सड़नि-असागक डब बहिते छै ।  
तँए आदो-पालु राजू ? ”

जहिना कियो सर्गीतक उच कोठीक मचपब कनासँ श्रिताकेँ झुगद क२ सुता दगए तँ  
केतो एकाबु रैनमे अमकरे कियो अपन ग्वसँ निवाकाब कप भगरानकेँ सुन भवत  
जकाँ नन्दी गाम रैना बाज-काज चनरैए तहिना अपन रैथित राषकेँ निकालेत नीकरुठ  
काका रैजना-

“रिंआहक आन खबच आ काजपब मन केतो नै अँकन अछि, किअए तँ चाडब-दानि  
खर्च भेल तँ रँदनामे लोको, मालो-जान आ चिड़-ओ खेतक । गाड़-सराबीमे खर्च  
भेल तँ ग्राहो उपवाग नै भेँत जे किनको डाकठब अँठाम जाए पड़नि । झुदा डेट  
सए जोड़ धोती मिला पाँदो कूक रिदागमे जे खर्च भेल ओ ठावनो मनसँ नै  
हँए । ”

जहिना मकभुमिमे रँब सिरा चमकेत किछ नै नजबि अरैत तहिना सुचिता काकीकेँ  
रैँषा रिंआहक सफलता मनमे डेलनिहँ चमकि चडचडनी-

“बाँड कानए अहिराती कानए तग नगन रँडरुम्बि कानए, सुहबदे झुहँ किअए नै रँजे  
छी जे आने रँबक रँप जकाँ कननी रँमावी धेने अछि तँए कने छी । अपने मने जे  
केतरो ग्व-चाडब चिररैत कानरँ तँ कि हमही सर्गी छी, रँष्ट थोड़े जेर । खेब जे  
होड, देह तँ रोगाएत अहीक अछि, तँए रँमावीक जडा तँ अपने बुनेत हेरै ।  
राजू, थोनि क२ राजू, कनि भानसमे देरीए कएत तँ कि हेते । मनक घाड जे  
मेँषाएत बहत तँ आगओ आ सुतेओमे कचि ओत । ”

सुचिता काकीक रिचाब सुनि नीकरुठ कक्काक मनमे भेलनि जे भबिसक लोक ठीके कहे  
छै बाजारकेँ किदिनि चिन्ता आ वानीकेँ किदिक । झुदा मनक रैथा नीक जकाँ रएह नै  
बुनि पाँरि सकेए जेकब हाथ-पएब नमहब हेते । घँको सरहक अजरी गति छै ।  
रँब-कनियाँक घबदेथीमे नगले सर्किकेँ द२ दग छथि जे सीता-बामक जोड़-  
अछि । रिधातो जेना जोड़ नगा पठौनि । झुदा नै सोनहनी तँ अँठनीओ रैथा तँ  
भगरै कबत । सोनहनी तँ तखनि भंगे छै जखनि सुनिनिहाब रैथा सुनि रँरसथित  
दंगसँ समाधान करै छथि, झुदा तँए कि अपन रैथा छुदैसँ निकालनासँ तँ अदहा कमि  
अछि । किअक नै कमत ? लोक नै सुनत तँ नै सुनह झुदा उगताहा तँ सुनरै  
कबत । रँजना-

“रिदागमे केते खर्च भेल से बुनत अछि ? ”



ठोरेपव रबी पकरैत सूचिता काकी रँजनी-

“रिदाग तँ रिदाग भेल, तगमे हमबा बुनैक कि प्रयोजन छि । ग्रा काज तँ प्रकथ पावक छी । जे घबसँ निकलि कहुँम-पबिराव धबिक चीन-पहचीन बये छथि, सेहो खपना कि भेल । जखनि खपने नै भेल तखनि चिञ्चु किखए हएत ? जखनि चिञ्चु नै हएत तखनि मने किखए रँखाएत ? मन हलुक कक । खनेरे तरे-तरे ग्वमसडँ छी ।”

नीतकठ कक्काक मन मानि गेलनि जे झँहछोहनि छोड़ा किछु नै भेटैत । झुदा मनक रँखाक कथा जँ रँजियो नै जेरै तँ ओकबा सर्ग खन्याय हएत । रँजना-

“जे रात सुनेमे नै खरँए ओ दोहवा कऽ पुछि जेरै । झुदा जे बुनैमे नै खरँए ओहन नै दोहवाएरै । शुकहसेँ कह छी ।”

खपन भबियागत आसन देखि सूचिता काकी हाथ-पएव सोम-साम करैत रँसनी । सोम-सामक कावण बहनि जे नजबि-नजबिक मिनानी नरँरे डिग्रीमे नै शित-प्रतिशित हुँख । रँजनी-

“देखु हम रिसबाह छी, जँ रीचमे कोनो रिसबि जाग तँ ओकव मदी नै भेल । झुदा खरँ, काज केतो आ रात केतोसँ नै कवरँ । जहिना-जहिना काज रँठैत गेल तहिना-तहिना रातो रँठरैत चरँ ।”

सूचिता काकीक रिचाव नीतकठ कक्काकेँ दमगव बुनि पडलनि । दमगरे रिचाव नै दमगव आशी जगरँए । रँजना-

“डेठ सए गोठैकेँ रिदाग केनियनि । ओना किनको ई दुखारे नै रँरेनियनि जे एक काजक एके रिदाग उचित बुनौ । झुदा तँए कि, किनको सर्ग कम-रँसी नहियेँ केनियनि ।”

पतिक रात सुनि सूचिता काकी ठपकनी-

“किखए, कियो किछु उपवाग पठौनि छि ?”

“उपवाग किखए कियो पठैत । झुदा मन मानि नै बहन छि । कहिये दग छी । डेबहो सए रिदाग डेठ नाखक छन । एक-एक रिदागक रसुमे एक-एक हजार नगन छन । झुदा खरँ जखनि पाछु उनठै तके छी तँ बुनि पडँए जे दस-सँ-पनबह गोठै धोतीओ चदबियोक उपयोग कबता रँकी कियो घबनीपा रँनौता तँ कियो गाडी-पोछना ।”



पतिक रात सुनिते सुचिता काकी कदैक रँजनी-

“अपन महिंसे किबो बहबिष नाथत तगले खनैके चित्ता किखए होगए ।”

सुचिता काकीक रात सुनिते नीरकठ कक्काके मडक उठनि रँजना-

“अनी मन लोक रिखाहमे काजसँ रिषि भारी रँनरँए । एकठा कहु जे अपन रिखाह मन खडि ।”

“मन किखए ने बहत ?”

“केते खरि राप केने बहथि से बुमन खडि ?”

“दहेनहा-भसेनहा खनदान बुने छि जे काजक हिसार राप-माएसँ नेर ।

“एना ने छिडा खाड सरा नाथ कपेखामे दनु गोठेक रिखाह भेल बह । जाड कनी चसगवसँ भानस कवर । खहिना रँजए नीक होगत एलेए ।

**ए कनापब अपन मतर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पब पठाड ।**



जगदानन्द मा 'मन्न' - रिहनि कथा  
ग्राम पोस्ट - हविप्रव डीहठेन, मधुरनी

१. हावि

साँनु पहब फोनक घण्टी रँजल । “प्रिन न न प्रिन न न न प्रिन न न न न ...”  
रिना अप्पन नाम रँतोने विसारब उठेनहुँ । कोनो जरार नहि । दोसब कातसँ  
शात ।

झुंकिरसँ पन्द्रह मिनट रँद फेब फोनक घण्टी रँजल । दोसब दिससँ फेरो कोनो  
आराज नहि । शागद हमब सुब पशिद नहि हेते खथरा कएकरो आओवसँ गप्प करैक  
हेते

वातिक एगावह रँजे फेब फोन आएल, फोन उठेनहुँ, “हेनो ।”

कनिक कानक चुप्पीके रँद उम्बसँ, “हम मानकी रँजे छी, रँहुत दिनक रँद फोन  
कए बहत छी, ठीक तँ छी ने ? साँनेसँ प्रीग कए बहत छनहुँ कदा हिम्यत नहि  
भए बहत छन । ए कहे नेन एतेक वाति कए फोन केनहुँ जे हमब रँह भए गेल



। ”  
“ हमबा बूमन खडि । ”  
“ कोना । ”  
“ दूरङ्गसँ एना रौद हम खहाँक गाम गेल बही ओहिठाम कएकरोसँ बूमनहूँ जे दु  
महिना पहिले खहाँक रौद द्वागमन दूनु संगे भ२ गेल झुदा ङा की महब गंतजाव  
नहि कए पएनहूँ । ”  
“ हम रेरँस बही .....खहाँक रँचारेँ पाँच महिनासँ अपना पेष्टमे बखने-बखने,  
आगु दुनियाँक नजबिसँ रँचोनाग खसमुन्नँ छन । ”  
“ हम कहि कए तँ गेल बहि जे छह महिनासँ पहिले पहिले आरिँ जाएँ कि हमबापब  
रिँशिस नहि बहन । ”  
“ एहन गप्प नहि छै, हमब तन एहिठाम खडि झुदा मोन एखनो खँही नग खडि पबख  
ङा  
समाज, गाम आ परिवारक सामने हम हावि गेलहूँ । ”  
“ की खहाँक पतिकेँ ङा गप्प सब बूमन छनि । ”  
“ हाँ । खहाँक द२ नहि झुदा रँचा द२ बूमन छनि । ओ देरतुना लोक छथि, होग  
रँना हमब रँचारेँ सेहो अप्पन नाम दै नेल तैयाव छथि ) ...कनिकार दूनु  
कातसँ चूपीकेँ रौद (हम एखन एहि द्वारे होन कएनहूँ जे हमबा आरँ तारेँक रा  
होन करैक चेष्टा नहि कवरँ ओहि सभकेँ रिँतन गप्प जानि रिँसवि जाएँ...हूँ२२  
हूँ२२२ । ” कानेक सब संगे बिसीरब बाथेक खँखँहाहँ, होन रँद ।

## २ .डिरीया

“ गे दाग खहाँक सभक शिया-पुता कतेक गोब होगए ? बाति कए डिरीया रौगब  
कए  
सुते जाग छीये की ? हमब मबदारा तँ डिरीया बूता दै छै । ”

## ३ .पिखाम

“ की यो नननजी एना ईरुव ईरुव की तकेँ छी ? ”  
अप्पन गामक झूतनागत भाँडक झूतसँ ङा सुनि ननन एकदमसँ सकपका गेला, जिनका  
कि रँहुत कारसँ घुबि बहन छन ।  
“ नहि किछु नहि । ”  
“ धुब जाँडु । गनाव नग पिखामन जाग छै की पिखामन नग गनाव । खहाँ एहन  
पहिले मबद



छी जकरा लग गनाव चलि कए एतौए आ एना ईकर ईकर तकने कोनो पिआस मिमाग छैक  
का ? पिआस मिमारैक नेर गनावमे कुदए परैक छै ।”

#### ४. प्रेम दीरानी

“खरे । खरे । बक ग का भइ बहर छै । तू सब एक संगे एतेक बास  
सामुहिक आयेदाह ।”

“हम सब प्रेम दीरानी, प्रेमकेँ अंतिम छेव पाबै नेर जा बहर छी झुदा खर  
अपसार्थी मनुख एहि प्रेमकेँ नहि बुझबै खर सब तँ प्रेमोमे नहा बुझबै  
तकेँ छी ।”

डिरियाक नोऽपव भलागत फतिनाक नुल्लमे सँ एकठग धीरेसँ हमर कानमे भनभना  
कए कहि डिरियाक आँचपव जा जवि गेल ।

#### ३. थापवि पिपा कए

“ये छोटकी कनियाँ, सुने छीये तलितक रव एतखीकँ जाड हुनकासँ कनीक नीक  
झँहेँ हँसि राजि निर्योन, खुशि भए जेत तँ टिकनी सेनब नेर किछ दएओ कए  
जेटा ।”

“एहन हँसि रँजे रँजा आ खुशि हेअरँजा मवदारौकेँ हम थापवि पिपा कए चैन नहि होबि  
देरौन, अपन जमएक रँड टिंता छनि तँ अपने जा कए किएक नहि खुशि कइ लै छथि  
।”

**ए कनापव अपन मतर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पव पठाड ।**



अखिलेश कुमार मण्डल

रैबमा, मधुरनी ।

रिहनि कथा-



## पंचरेदी

जेकवा जेन चोबि करै सएह कहै चोवा, भोरेसँ मनमे रैब-रैब उठै नगर ।  
केतरो ठेन क२ रँहैरँहै चाही से रँहैरँहै ने कबए । तखनि मन भेन जे जहिना  
केकरो दूखनामा सुनने दूख कमे छै तहिना जँ समाजोक रातकेँ सुनि आ अपनो रात  
कहिँ । उठै क२ नातकाका नग गेलौं । देखते प्रुद्धनि- “रौखा मन रँड नूकर  
देखे छिखह ?”

कहनिथनि- “काका, तेहने बगड़ । मनकेँ बगड़ा बहन खडि जे कि कहौं । तँ  
नूकोने छी ।”

नातकाका प्रुद्धनि- “से कि ?”

कहनिथनि- “काका, ओना ई रातकेँ समाजक पंचरेदीमे उठैरँ, झुदा खहाँ घबक  
गाबजन छी तँ पहिने खही बूना दिख ।”

अपन रँटत मान देखि नातकाका रँजना- “रैस रात मनमे एतह । तेहने जुग-  
जमाना भ२ गेन खडि जे लोक नूठो रातकेँ तेना रँट ।-चट । क२ रँजेए जे  
जेना ओकरे बाज होग ।”

“असथिबसँ बूना क२ कहथ”

कहनिथनि- “काका, खही कछु जे ङ उचित होग, जग समाजक पाग अकासमे ठेकने  
छी तग समाजक लोककेँ कियो थापूव तँ कियो भोजनभङ्ग कह ?”

नीक जकाँ नातकाका ने बूना । दोहरौनि- “कनी हबिछा क२ रँजह ने ?

काकाक आशा पारि अपनो आशा जगन । कहनिथनि- “काका अखुनका जे रँखाक  
रँबियाती भ२ गेन खडि तेकवा गामक सब दू व क२ देनक तेन, ओकरे देखा-देखी  
हमरँ दू व क२ दिई से नीक हएत ?”

रँन रात बूनामे ठेकावा दैत नातकाका कहनि- “से तँ नहियेँ हएत । झुदा रात  
कि भेनह से ने रँजह ?”

कहनिथनि- “काका, देखते छिई जे अखुनका रँबियातीमे रँसी गोष्टे ओहने बँह जे  
चूड । भुजा तडन माछ आ दुष्टा रँतन घबरावी दिसिसँ परिते छाती उघाबि क२ जशी  
द२ दग छै, किछु गोरे सए-दू-सए बसगना आ प्रवा जशी द२ दग छै, झुदा हम तँ





तगसँ भिन्न छी । भोजनक झूथा खंग गोवस छी । एक तँ ओहना घबराबी पाँट  
किनोसँ रैसी दहीक ओबिधान नहियेँ करै छथि, तेकवा जँ छच्छ क२ दग दिई तँ हम  
खाधुव भेनौं कि समाजक गज्जति बथे छिई । तगने लोक एना किखए रैजेए ।

ई कनापब खपन मतर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पब पठाड ।



प्राञ्ज कापड्डी केशरनात राँथ शिवपा सम्मानसँ सम्मानित बिपेष्ट पुन्य मन्दव

### प्राञ्ज कापड्डी केशरनात राँथ शिवपा सम्मानसँ सम्मानित

नेपाल भाषा पबिषद मैथिली भाषाक चर्चित साहित्यकार एर प्राञ्ज वाम भरोस कापडि  
भ्रमवकेँ केशरनात राँथ शिवपा सम्मान(प्रवक्ताव)सँ सम्मानित कएनक खडि ।

बाङ्गुय भाषामेसँ एक मैथिली भाषामे उकेरु, साहित्यिक बचनासभ क२ मैथिली भाषा  
साहित्यक श्रीरुहिँकेँ नेत कएने योगदानक कदव करैत पबिषद प्रसिद्ध कथाकार  
केशरनात कर्मचार्यक नाममे स्थापित ( केशरनात राँथ शिवपा ) सम्मानसँ हुनका सम्मानित  
कएने खडि । ओहि खरसब पब प्राञ्ज कापडिकेँ दशे हजाव नगद एर सम्मानपत्र प्रदान  
कएन गेन छन ।

करिकेशरी चिन्तधर द्दयक १ सय गम जन्म जयन्तिक खरसबपब नेपाल भाषा पबिषदक  
खपाम्क फनिन्द बने त्रैजाचार्यक सभापतिरुमे मंगल दिन सप्पन्न समारोहमे प्राञ्ज भ्रमव  
उज्ज सम्मानसँ सम्मानित भेन छथि । सम्मान ग्रहण करैत प्राञ्ज भ्रमव मैथिली आ  
नेपाल भाषाक सर्गु मध्याकारेसँ निबन्तव बहन आ मैथिली भाषा साहित्यक खनेको प्राचिन  
खभिनेखसभ नेरारी निपीक रिभिन्न संग्रहमे संग्रहित बहन रैतौननि ।

बाङ्ग पम्कसँ खन्यायमे पबन खन्य भाषा संग्रहि ङ दनु भाषासभ खपन खस्तित्क बम्कारेँ  
नेत निबन्तव संघर्षवत बहन सेहो रैतौननि । रिधम सर्गुत २००१ सारमे स्थापित  
नेरारी भाषा साहित्यक खग्रणी संस्था नेपाल भाषा पबिषदसँ मैथिली भाषाक साहित्यकारकेँ  
प्रदान कएन गेन ङ सम्मान पहिन रैब खडि ।



ओहि खरसब पब नेपाल सम्वत १९३२क भाषाथुरा प्रबन्धक प्रा. प्रेम शान्ति तुनाथ, २३ हजार बाशीक चित्रधर सिवपा प्रबन्धक गायक भुग्वाम श्रेष्ठ, १३ हजार बाशीक ठाकुर नान सिवपा प्रबन्धक निरन्धकार सुरेन्द्रमान श्रेष्ठ आ मोतीनान सिवपा प्रबन्धकसँ खलुवास्त्रिय भिष्कु संघकेँ सेहो सम्मान कएल गेल छल । ओहि समारोहमे पबिषदक उपाध्यक्ष प्रा. शूर्णी शीक्य, महासचि नरीन्द्रबाज जोशी, पबिषदका सदस्य नरेशिब शीक्य सहितक रजसभ मात्रभाषक साहित्यमे योगदान देनिहाब संघ संस्थाकेँ बाज्य रोरान्ता कबरौक एम गणतन्त्र खेलाकरौदो नहि बकर प्रति चिन्ता रज कएने छलथि ।

ई कनापब खपन मतर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पब पठाउ ।



डमेशे मण्डल, ि नर्मनी, स्वपौर ।

वधुक्था

जीरिडे नरु



सोन-रुप जहिना आंगिक ताड पारि गनए नगैए तहिना आमे ग्लानिसँ गलैत बाधामोहन  
 ब्रह्मस्थान पहुँचन । तेसबि साँसक समए बह । पहिन साँससँ जे गामक माए-रहिन सब  
 आरि-आरि काँच माँसक दिखारी नैसि साँस दैत आएन छेती ओ दोसबि साँस ठपैत-  
 ठपैत पतवा गेन छेती । यएह सोचि बाधामोहन तेसब साँसकमे पहुँचन छन जगसँ  
 कियो देखए नै । किछ मानेमे झुहूर्तो नीक छलै । एक तँ एकान्त दोसब अन्हाव आ  
 तेसबि देखिनिहारो-सुनिनिहार नै । ब्रह्मस्थानक झुहूर्तबि नग आरि बाधामोहन अँसकि  
 गेन । अँसकि कि गेन जे पएव ठमकि गेलै । चाककात आँखि उठा तकनक तँ  
 अन्हावमे नै रैसी दुब देखनक आ नै अन्हाव झोडा किछ खान देखेलै । मन मनि  
 गेलै जे नै कियो देखिनिहार अछि आ नै सुनिनिहार । राँहव अन्हावमे स्थानक  
 चाककात कुरव सब अपन-अपन सीमानक टोकसी नीनभेव भइ करैत बह । नीनो  
 केना नै अरिंते, भिनस्रबका दूधक टाव तँ रएह सब नै पीरौ करैए आ पठका-पठका  
 करैत नेहरौ-थकरौ करैए । खेतिकव जहिना नीक उपजैत खेतक आडा यो धकिया  
 खेत रैनरँ चरिं आ अधना उपजा भेने नीको खेतकेँ पवता-पवता पवतीए रँना  
 दगए जगसँ राँठ-रँठेही रीचे खेत देने बस्ता रँना रीचे-रीच चनए नगैए तहिना  
 बाधामोहन अपन कएन काजक ग्लानिसँ धकियागत-धकियागत देरानय पहुँच गेन ।  
 हीयकेँ हारैत आगुमे ठाठ केनक । जेना-जेना भीतव प्रवेश करैत गेन तेना-तेना  
 मनो पसिनेत गेलै । अंतमे एहेन भेलै जे पुँखा रँनि अकास उडत आकि पाखव  
 रँनि पानिक पहाड रँनत तग ग्वनधुनमे पडा गेन । दनु हाथ जोडा रँजत-

“ हे रँवहमरौरा, अपने यमबाजकेँ कहियन जे जरीरिते नबक पठा दधि । जहिना अपन  
 मित सग तहिना सकुम्पाक हवावा छी; हवावा छी । ”

कहि बाधामोहन महादेव जकाँ तान्दर नाच-नाचए नगन ।

बाधामोहन आ रिसमोहन रँचसँ नगोष्टिया सर्गी । एकठाम दनुक घरौ छै । राध-  
 रौनसँ नइ कइ घब-आंगन धबि संगे बह छन । महारिद्यानयक अन्हारमे दनु गौरे  
 मैथ्रीक पास कइ बहि गेन । खान-खान रिषए जे जहिना पठनक से तहिना ससबि  
 गेलै झुदा समाज अध्यायनक ईकाड रिषय, ईकन बहलै । जगसँ दनु मिति अपन  
 पहिचान आ सकुम्पाकेँ मजगुत रँनरँमे गाबि-गरौरनिसँ नइ कइ माबि मरौरनि धबि  
 कवरौ केनक आ कएक रँव जहनो गेन आएन अछि ।

जहिना नड ाग नडा जहन गेनिहार जेन जेनागकेँ खवाम कवरँ रँनेमए, सएह  
 अखेन धबि गहो दनु गौरे रँनेत आएन छन । एक जगतिक बाधामोहनो आ  
 रिसमोहनो झुदा दनुक रीच दु दियादी । ओना दनु दियादीक रीच पुस्तनी नगड ा चरि

थरै छत्रे झुदा दनुक दोस्ती तेकवा मेष्ठा जकाँ देने छत्रे । जे पछाति थारि क२ खेनाग-पीनाग, रँव-रँवियाती सभ चरु रगले । उना, नरका तुवकेँ पछिना रात ने कियो कहनिहार था ने कियो बुँमरौ करैत । झुदा जहिना गहीवगव खादिकेँ डुपबका खव-पात छिन-छानि क२ भवनापव डुपवसँ भवत बुँमागव, झुदा हाथकेँ के कहए जे पियो-पुताक पएव चपि जाग छै तहिना बाधामोहन-रिसमोहनक दियादीक रीचक खादि डुपवसँ तँ चिक्कन रँनि गेल छेलै झुदा भीतवसँ भितवाएने छत्र ।

रिसमोहनक पितियौत भाए मनमोहन झुम्रँगमे रीस रँवखसँ नोकबी करैत थारत थरि । एक परिवार बहने घवाड कि रँरावा भागे भाग भेत छत्रे, जगमे दनुक घरो था रँड ी०-माड ी छेलै । उना दनु परिवारक घवाड ी रोड पकड ीए झुदा रिसमोहनक घवाड ीक रँगरमे तीन-रँठिया, जेपव दसठि दोकान-दोरी रँसि चोक जकाँ रँनि गेल । चोक भेने रँजावक झँह खुगत । एक्क खेत बहितो एक भाग झुहथरि रँनि गेल था दोसव गोवथारी । जगसँ दनुक महतमे घष्ठी-रँठ ी भ२ गेलै । झुम्रँगमे बहने मनमोहनक रिचावमे सेहो रँदनाड एले । जगसँ नोकबी करैसँ नीक थपन रँधा मनमे एले । स्रारिको छेलै, उद्यागिक शिहव झुम्रँग था तेतए मनमोहन रीस रँवख रिंतेने थरि । झुदा थपन जिनगी तँ तेना उमवा गेल छै जे सारि रँवखसँ पहिने छोडत तँ पेन्शनकेँ के कहए जे थानो-थानो जमा-जूमी डुमि जेते । तँए मनमोहन थपन रिचावकेँ रँष्ठा डुपव केन्द्रित केतक । निर्णए क२ नेतक जे रँष्ठाकेँ उद्यागिक शिक्षा दियाएर । उना उद्याग तँ रँग-रँवगक दुनियाँमे पसवत थरि झुदा थपन मनोनुक उद्याग रँसी नीक होग छै । सह केतक ।

रँष्ठाक पठ ीग छोडनापव मनमोहन सभतुव गाम-थारत । जगरैव गेल बहए तगरैव एक्काष्ठा दोकान ने रँनर छेलै । थखन प्रधानमंत्री योजनाक सडक, तीनष्ठा तीनु कोनपव चापाकर था एक-थाप घष्ठी रँसिक जोगाव सेहो रँनि गेल जेकवा देखि झुम्रँगक चौराहा मनमोहनक मनमे नाचि उठले । मनमे उठिते थनेतिक रँष्ठा ताकए रगत । मनमे एक्काष्ठा मशा जे रिसमोहन हमवा दिस चरि जाए था हम चोक सागड चरि थारी । तीन कष्ठा चोकक जमीन । नाथकेँ के कहए जे करोड ीक हत । करोडक कारोबार नेत दू-चावि नाथ छिष्टै पड ी छै । जारै से ने हेते, तारै चिड ी-चुनझनी पछोव केना केना रगत ।

गाम तँ थथनो रँह गाम छी जे चूड ी-दहीक रँग चीनी मिठा तीत-मीठ गिरेत थारत थरि । हरीडेपव दस गोष्टेकेँ कोनो भाँजे थपना दिस केनाग, यएह थथुनका पनचैती छी । ३ रात मनमे थरिते मनमोहन गामक थोकाव पँचकेँ पँठिया घवाड ी उनरँरैक योजना मनमोहन रँनेतक । सँनुका नठि या जहिना पु सुनिते सभ पुपुथाए रँगैए तहिना एक स्रवमे सभ पँचैतिया त्राउण्ड रँना नेतक जे जथनि कानूनी रँरावा



ने छिर्ष तखनि ओ रँठररे ने भेर । मोथिक रँठरावक कोनो मानि ने । भनरि रेद-शोसूत्रक अथाव-रात किअ ने ह्अ ।

पाँच परिवारक दियारी रिसमोहनक । असगरे दनु राँपुत रिसमोहन गाममे बहैअ आ राँकी सब दियार दूमरँअमे । ओना दनु राँपुत मनमोहन रूँगरो ।

बाधामोहन सेहो पनचेतीमे अअर । नटा या जेबमे अपनो नटा या रँनि रिसमोहनक संकल्पित मित्र बाधामोहन चुपे बहर । अपन स्थिति कमजोब हाँगेत देखि रिसमोहनक मन बाधामोहनकेँ ओग नजबीअ देखरक जेहेन रँनिदान हाँगेत समअ छागबक हाँगे छै । दूदा संकल्पित जिनगी । अपन हँसत अंत देखेक जिज्ञासा करैत रिसमोहन बाधामोहनकेँ प्छरके-

“आन जे ह्अ । दूदा तूँ तँ संकल्पित जिनगीक सर्गी छिअर, दूह किअ रँन बखरँह ?”

रिसमोहनक मनक राँत रूमितो बाधामोहन दियारी आडा ठाढ़ क२ ओही आडा मे अविआ गेर । भंगैत-पड अगत संकल्पित सर्गीकेँ देखि रिसमोहनक मन संकल्पकेँ अगुअरैत धधकि गेर, राजर-

“जग धवतीपर नुठ-हुसमे लोक अपन रँनि चटा बहर अछि तैठाम अपनो जूनम अपने ने रोकि पारी । अ तँ जिनगीकेँ पाखा देनाँगे भेर । अ राँत सत् जे रँनिदान कतअ हाँगे... ।

रँमकि क२ हेबि राजर-

“हम पनचेती ने मानरँ । अ धवती हमब रँनि मंगैअ ।”

चट्ट १-७तवी रँजनिहावक रौन गाम । तेना नरकावा भवरक जे दनु राँपुत मनमोहन, दनु राँपुत रिसमोहनकेँ मारि नठियोरक । जे आठम दिन जागत-जागत रिसमोहन खतम भ२ गेर ।

अ कनापब अपन मतर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पब पठाड ।

### ३. पद्य



३.८. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'खनिन' - गजन १-४



३.२.१. कन्धी कामत-गीतः- जठ-जठिन २.



शालिनीशुक्ला चौधरी-नेताजी



३.३. जगदानन्द न्या 'मनु' - के पतियाएत



३.४. मनोज कुमार मन्डव-देशी कौथा



३.७. कन्दन कुमार कर्ण- गजन



३.७. जगदीश प्रसाद मण्डव-सुखव काज



३.१. बाजदेर मण्डव- दु ठा करिता



३.१

सह नावायण-तहकैत समाज



जगदीश चन्द्र ठाकुर 'खनिज'

४ टी गजन

1  
एते रौमन कि ए बह छी अपनामे अहा  
खरै छी रँडी-रँडी बाति क सपनामे अहा ।

चवि जाउ दिह्नीए कि झरँगा कि रँगनोव  
बहरँ एसगव कोना क पठनामे अहा ।

होगए सात भवि पव भेँठे दुनु गोठेके  
जखन कठनीमे छी हम, सतनामे अहा ।

भेँठे जेता शिखनी, दुर्योधन आ धृतराष्ट्र  
मिना क देखरै खरै कोना घटनामे अहा ।

ओरवा कि ए मारे छिई झक्कास अहा भाग  
जेहने छी तेहने देखरै अयनामे अहा ।

गवमीमे जन तं भगए जागए अमृत



चाहे ज्ञाठगामे बाथि पीरुं कि रँधनामे अहाँ ।

रिराहके रिराहक गबिमा कक प्रदान  
किए हंसत छी कपडा आ गहनामे अहाँ ।

सबत राषिक रँहब, रर्षा-16

2

जंगल आओव पहाड देखलौं जीरनमे  
गुजगुज बाति अन्हाव देखलौं जीरनमे ।

मोनक नीतगगनमे छिठके रिजलोक  
ममता आ म्लह- दूनाव देखलौं जीरनमे ।

मन आंगनमे चाकधामक दर्शन भेल  
मुलाक ठाँ आ रँजाव देखलौं जीरनमे ।

नूँ, गीत,संगीत,चौर गुँव हँसी-ठहक्का  
नोबक कतेक ठयाव देखलौं जीरनमे ।

माबि-पीठ,दंगा आ फसाद, छीना आ नपठि  
आदब आओव सकोव देखलौं जीरनमे ।

देखलौं गंगा रँह छती अपने अलुबमे  
पौथवि आ धाव- अनाव देखलौं जीरनमे ।

सबत राषिक रँहब, रर्षा-16

3

अपन कहै, सुनेँ हमवा  
किछै लोक चिन्है हमवा ।

सुप जँ हम त चातनि अछि ओ  
तेयो मुँह दुसँ हमवा ।

जकरे खातिब टोबि केलौं  
सेहो टोब कहै हमवा ।





एसगवमे तं पएव छुरैए  
लोक न ग गबियरैए हमबा ।

काष्ट छीष्ट क गेल रौष्ट पव  
खरि तान पुँडेए हमबा ।

टोव टिकडि क रौजय जखने  
तामस तखन उँठैए हमबा ।

हम मुसस रौघ रँनेनिये  
उनठै कवरि खरैए हमबा ।

मात्रा-15 प्रलोक पातीमे

4

थिक हाङ्क मैदान ग जौरन,कोना रँटु हम  
अपने मिक मूक कावष, कोना रँनु हम

सोनामे तं छुथि दादा-दादी,कक्का-काकी,भैया-भौजौ  
सभस खेत-पथावक खातिव कोना नडु हम

बाज-पाष्ट की कवरि जखन लोके नहि बहते  
भीषा नव-सहावक परित कोना चटु हम ।



भीथ मागि रँक खाएर,नडरि नहि भैयारीमे  
हे मधुसुदन गालीर हाथमे कोना धक हम

हे केशर, धूपया हमबा दूरिधस झुङ कक  
हमव रँछि नै काज कवय, की कोना कक हम

सवन रारिक रँहव, रण-18

ई कनापव अपन मतर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पव पठाउ ।



१.  कर्मी कामत-गीत:- जष्ट-जष्टिन २.  शान्तिरश्मी चौधरी-नेताजी

१



कर्मी कामत

गीत:- जष्ट-जष्टिन ।

जष्टिन- छोड़ा मिथिला नगबिया

राधि खपन आ पोष्टबिया

तू कतए जाग उँह रे..... ।

जष्टरा कतए जाग उँह रे..... ।

छोड़ा खपन सजनियाँ

तियाग क२ सभ खुशियाँ



तू कतए जाग छह रे

जष्टरौ कतए जाग छह रे..... ।

जष्ट- जाग छियौ गे

जष्टिन देशे-गे-रिदेशे

जष्टिन देशे-गे-रिदेशे

भ२ गेलौए गेव खरौ

खपन प्रदेशे ।

साइ १ खनरौ गे जष्टिन

गहना खनरौ गे.....

साइ १ खनरौ गे जष्टिन



गहना खनरौ गे

रौखा-बूँछी जे सेहो

नर खंगा खनरौ गे ।

जठिन- नै जेरौ रे जठरौ

रिदेशिक सनेस

नै जेरौ रे जठरौ

रिदेशिक सनेस

हमरा तँ चाही जठरौ

तोहेव संग खा सिनेह ।

जाठ- नै रोक गे जठिन

हमर तँ डेग



कमेरै नै तँ केना

भवै सरक पैठ ।

रौखा कनतौ गे जष्टिन

रूचा ननेतौ गे

रौखा कनतौ गे जष्टिन

रूचा ननेतौ गे

जबतौ जे पैठ जष्टिन

कोग नै सोहेतौ गे ।

जष्टिन- घुब-घुब रे जष्टा

सुन-सुन रे जष्टा



जिद्य छोड़ रे जठा

कोग नै नलेतो रे जठा

हरे जठरौ२२२२२२२२

रे मेहनति कवि नून रोठी खेरै

झदा संगे मिथिलेमे बहरै रे जठा..... ।

चन-चन रे जठा

खपन देशे रे जठा

खपन खेत रे जठा

मकखा रोठी रे जठा

नून रोठी रे जठा

हे रे जठरौ२२२२२२२२२२



तू धान रोपीहै हम जतथै

त२ क२ एरौं रे जठै..... ।

जठै- स्न-स्न गे जठिन

हमव सजनी तू जठिन

घबक नम्मी तू जठिन

हमव जिनगीक गाड़ १ तू जठिन

हमव ज्ञानक खान तू जठिन

हे गे जठनी ज्ञ ज्ञ ज्ञ... ।

तू जीतवैह हम हबलौं गे जठिन

छोडा खपन देशे



ने केतो जाएरँ गे जष्टिन

बहते मिथिलेमे

सदैर खपन रास गे जष्टिन

हे गे जष्टनी झ झ झ... ।

गै दनु गोवा मिति

मेहनति कवरैँ तँ जिनगी स्रष्टा हेतेय गे जष्टिन ।

जष्टिन- हमब साजन तँ जष्टा

तोहब सजनी हम जष्टा

हे रे जष्टरा२२२... ।

दनु गोवा हंसत

खतिना जिनगी कष्टरँ रे जष्टा..... ।





२



शान्तिनम्मा चौधरी

नेताजी

रौप रे रौप । ...

करैत छै कोना फड़फड़

उड़त फतीगा जकाँ

होड़ि देतय कखन ककब खाँथि

खोखबि नेतय कखन ककब झूठ

काँष्टि नेतय कखन ककब मसबी

माबि देतय तबछेरौ नष्टकन तबकल्ला

गाछ चढ़न पसीरौ जकाँ

बहो रा भाँड़मे जाँक कनतुब रँशितक

थपन नरनी भरैक चाही रँक

राजय के छेरैता कष्टाह



रैपुतगव नाठीक जेव तै मोन छुनि ठैबरैताह

पंचायत खेनके, रिनौक खेनके, रैको खेनके

थानो संग पिठपिठक तँ छैक सह हान

जतय धौगधेक जुथागत रारसु

हँचैंगरे नै रैजेते फच-फच गान ।

ओह, ननकारामे ओज की ? ...

जेना सूर्य होगथ नान-रान-पान, स्वभाषचन्द्र रौस

कतय की राजथि तकव छैक कोन होस

धनिकायमे शौभय नेहक सन शुद्धरस

ठोढ़य पव साजन हूसि-फास सरिपान, रिधेयक, थप्यादेशे,

योजना, पविद्योजना, पंचायतीबाज, लोकतंत्र आदिक अस

पिठपिठ तँ धवते शाखेक नै बंग

कथनो सनठै, कथनो उनठै रैह गंग

जेहने समय-पविस्थिती तेहने दर्शन

थन लोहिया, मार्क, नेलीनरादी

थनेमे सुधर्म, संस्कृति, बाह्यरदी,

दरैप गेनय मोन तँ निख कतैक नेरँ गांधियेक मंडन

रुमारबाव रैठैके पविबाव द गवरीरेखामे नौरैक सारिग

थपन खेत खा रौड़ १ पठरै सातठै रिनौकिया पपिगसेठ-रौबिग

गाँदवा-आरास, रूपापेसन, हसन-सकृतिपुतिक रैठारामे



पिछराबक घाम ँघबि जागन्नि एंड १

जेना चिन्तीरे-पिछक स्वभागे खसत हो मबी

नेताजी छथि ओखन भाजपाक महामंत्री

दसे दिन पहिने बहथि जन लोकजनशैजिक खपिसंतबी

कियो कहत छनाह एम्ब भेदन्नि भितबिया जद-यूसँ साँगाँ

ओहिदिन लोनियाँरैत काँथेसिया-पेनियाँकेँ करैत छनाह राँस

बाजद केब मित्रभाङा संग छैन्नि सेहो उठक-रैठकी

बाजनीतिक जोकबलोकनिक संगहि फाँथ पानपवाग-चूठकी

पाँपीधर्म, सिङ्गाँत, ककरो सबकावसँ कथीक सरोकाव

ओतहि जयकावा जतय रिदहैय एक्काँठोप पंचमकाव

झूह पबिछ राजताह तँ बुँमेता, खहा । कतेक ज्ञानीलोक

थैकि दिओ मधकाव, तँ लागि जागन्नि म्फणहिमे थैक

की कवरै, खागकान्नि बहनै कतेक गोथैक रातेक ठब-ठीक

झूदा रिसराँस दियारँए बहि-बहि छरत माथक ठीक

भेँठत एहने ठोपधारी हिनु जे झूसि राजत गँगँ

मियाँ नमाजी हजावरैव दाढ़ १ छरि खागत सम्पत

नेताजीतँ कहत छथि खपनाकेँ बाजनीतिक चाणक

झूदा भविगामक लोक कहन्नि हिनका लागि खागत राँनव

ए कनापव खपन मंतर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पब पठाउ ।



जगदानन्द झा 'मन्न'  
ग्राम पोस्ट - हबिप्रब डीहठेन, मधुबनी

के पतियाएत

के पतियाएत

झा कएकबा कहू

सभक आँखिमे

पसि कए कोना बहू

सदिखन आँखिब

हमरेपब उठन

कतेक परीक्षा

आरौं सहु

जतए ततए हमही

नुठन गेनहु

घब रौहब सभतबि

हमही ठकेनहु

हम नाबी नहि

नबकेँ भोगा



सरदिन हमही

जितन गेनहूँ

सुहृष्टे घब-घब

पूजन जाग छी

झड १ मटोबि हम

भोगन जाग छी

खरु वारण

रनि भाग हमब

बामसँ पाछु

छुटन जाग छी ।

\*\*\*\*\*

ई कनापब खपन मतर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पब पठाउ ।



मनोज कुमार मन्दन

देशी कौथा



मन पबि बहन थुडि ओ दिन  
जहिया माएक हम छेष्ट नैना बही  
माएक आँचव तब खेनैत-धुपैत बही  
माएक रौत हमब धियान एक बँह छैनए  
जखने रँजै अँगनामे कौआ  
बूढ़ि या दादी राजि उठै छेनी  
पाहन एता एना तगि बहन थुडि  
सुनिते मन गद-गद भइ जाग छैनए  
आरँ तडू आ-तबकारी के पुछैए  
दही-चीनी सेहो भेष्टैत  
दिन भविमे कएक रँव पुछिँ  
माए आग कखनि पाहन गुता  
आरँ ओग दिनक यादेष्टा बहि गेन  
देशी कौआ मबि-मबि गेन  
काबकौआ गिबीहरासु भइ गेन  
आगक कौआ राजरँ ग भइ गेन  
थमगतक सनेस दइ गेन  
कौआ रँजिते कनियाँ कह छथि  
ठेप नइ एकवा भगाउ  
हम पुछनिथनि कि कह छी  
रिनु भगौने देशी कौआ भागि गेन



की कारो कौथाकेँ रिदाहे क२ देरै

कौथा देखरै सपना क२ देरै ।

ई कनापब अपन मतर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पब पठाड ।



रुन्दन रुमार कर्ण

गजन

नजरिमे नजरि त२ मिनाक देखु  
दीप नेहके त२ जबाक देखु

दिर अथन कनी अछि प्रिय अहाँके  
ओ कनी अहाँ त२ थिनाक देखु

चेहवा अहाँक चमेक जेते  
आँथिमे अहाँ त२ रँसाक देखु

दोहवाक भेष्टत नहि जरानी  
मोनमे उमंग जगाक देखु

रँबसि पडत सारन जीनगीमे  
हमब जेन कप सजाक देखु

२१२-१२११२-१२२

ई कनापब अपन मतर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पब पठाड ।



जगदीश प्रसाद म्हाडव

### सुखन काज.....

सुखन काज जेते जिनगीमे  
सुखन-सुखन करैए नगै छै ।  
हनै-हन रन-रन रनैत  
रंगिया राग रनैए नगै छै ।  
रंगिया राग रनैए नगै छै ।  
सुखन काज..... ।

पुस पुसौठ कहि-कहि  
मसिया हन पेरैए नगै छै ।  
अपिया हस्त अपिया अदवि  
पथ मसिया पेरैए नगै छै ।  
पथ मसिया पेरैए नगै छै ।  
सुखन काज..... ।





पथिया पथ पथड़ा -पथड़ा  
सतिया सात सतिना नगौ छै ।  
थाठिया थाठिक थाड़ा रनि  
हपता-सपता रनए नगौ छै ।  
हपता-सपता रनए नगौ छै ।  
सुफल काज..... ।

काम-धाम कि धाम-काम  
मन मदिब मनरनए नगौ छै ।  
थगति-रंगति नतवि फड़ा  
थमबनती कहरनए नगौ छै ।  
थमबनती कहरनए नगौ छै ।

छछ हाथ झहमे जहिना  
किछ ने दइ पारि परै छै ।  
बेद बेदन बेद ने बुमि  
कर्मक फल परैत बह छै ।  
कर्मक फल परैत बह छै ।  
सुफल काज..... ।



ई कनापब खपन मंतर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पब पठाड ।



बाजुदेर मण्डव

दू ठा करिता-

बाजुदेर मण्डव

उतहन

सभ तँ बह छै खरीक लग-पास

हम तँ खरै छी चासे-मास

पढ़ि गेल रिपति भेलौं निवाशि

खकानक कावणे डहि गेल चास

दिन खदहा पेष्ट वाति उपाम

मनमे छैनए जे पूवा हएत खाम

भौजिक ताना सुनि खाँथि भवन नोब

रैथामँ भवन मनक पौब-पौब

एक झुंझी देनासँ की भ२ जाएत खोब

खाँथिसँ रहि बहन खडि दहो-रहो नोब

हमब नोब नै रनि जाए खँगोब

यो भैया, एकदिन हमरो हेते भोब

चूपपी साधने खसौने छी पाड



ई सम्पतिपव छै हमरो अशिकाव  
आगुमे ठाठ रौनपनक पियाव  
नाता तोड़ि केना कबर तकबाव  
कनेत जा बहन छी जाव-जाव  
माए बहत तँ करैत दूनाव  
अपने चास-रौसपव कबए पड़त आस  
रौरौक रँखावी आ धियाक उपस । ”



आपसी

“ जिनगी भवि दैत बहनों हूँ

आपस भेटै बहन अछि शून

मन भए गेल रियासत

किथए भेटैत ए डण्ड

कहाँ केनों कोनो भूँ

देहनो चीज नै देरै

हम देने बही हूँ

काँ केना नैरै ? ”

“ हमबा नग रहत अछि तँ दोसब की देरै

जखनदस्तीओ कबरँ तँ आरो की नैरै । ”

“ थूंगि बहन अछि मनक बाज

सुखबखसँ भवन छन हमब काज । ”

ए कनापब अपन मतेर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पब पठाउ ।



सब नाबायण

नहकैत समाज -----  
केथनो क' मोन भठकि जागए  
केथनो मोन अठकि जागए  
आ केथनो मोन भवकि जागए  
झदा की कक, किछ ने मोहागत अछि  
लोकक रिदुप चेहवा ओहिना देखागत अछि  
कियो ने भेष्टैत अछि, ककवा कहरैक  
के सनत केकवा पनथैत छैक  
समाज रदकप ओमवायन छै  
बूष्टैवा बूष्टैत छै, समाज देखैत छै  
के राजत केकव मजान छै  
सभ त बूष्टय मे अपने रैहान छै  
जे रूख रूख देखैत छै, ओ त नाचाव छै  
ओ की रजते ओ त रैदम छै  
साँस लेत छै रौन निस्पंद छै  
कतौ अकार छै, कतौ दूर्भिक्ष छै  
कतौ ठनका ठनकैत छै, कतौ रज्र खसत छै  
झदा जे निश्रुव छै, शीतान छै  
ओकवा न रज्रा आसान छै  
ओहन लोक कहियो नहि सुधवत  
रैमानी, शीतानी कहियो नहि रिसवत

ई कनापब अपन मतर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पब पठाउ ।

बिदेह नूतन अंक गद्य-पद्य भावती



१. **मोहनदास (दीर्घकथा):** लेखक: **उदय प्रकाश** (मूल हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुराद रिनित उपेन)

मोहनदास (मैथिली-देरनागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलासुब)

मोहनदास (मैथिली-ब्रैल)

२. **छिन्नमस्ता**– प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक सुशीला सा द्वारा मैथिली अनुराद

छिन्नमस्ता

३. **कनकमणि दीक्षित** (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुराद श्रीमती कपा धीक आ श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

भगता रैङ्क देशे-भ्रम

४. **तुकाराम वामा** शैष्टिक कोकणी उपन्यासक मैथिली अनुराद डॉ. शिबु कुमार सिंह द्वारा पाखनो

रौतानां पुते

**रौता लोकनि द्वारा स्वर्गीय ग्लोक**

१. प्रातः काल ब्रह्मद्वर्त (सूर्योदयक एक घण्टा पहिने) सरप्रथम अपन दू हाथ देखरौक चाही, आं ङ ग्लोक रजराक चाही ।

कवाथे रसते नस्माः कवमश्च सबस्रती ।

कवमुने स्थिते ब्रह्मा प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ नस्मा रसत छथि, कवक मध्यामे सबस्रती, कवक मुनमे ब्रह्मा स्थित छथि ।  
भोवमे ताहि द्वारे कवक दर्शन कवरौक थीक ।

२. संध्या काल दीप तैसरौक काल-

दीपमुने स्थिते ब्रह्मा दीपमश्च जनार्दनः ।



दीपाग्रे शिखरः प्राकृतः सन्ध्याज्यातिर्नमोऽस्तुते ॥

दीपक मुन भागमे ब्रह्मा, दीपक मध्याभागमे जनार्दन (रिष्णु) आऽ दीपक अग्र भागमे शिखर स्थित छथि । हे सन्ध्याज्याति । अहाँकेँ नमस्कार ।

३.सुतरीक कान-

वार्म स्कन्द हनुमन्तु रैनतेर्य रूकोदवम् ।

शियने यः स्वरैर्निर्ण दूःस्वप्नस्तस्य नशति ॥

जे सभ दिन सुतरीसँ पहिने वाम, क्रमावस्त्रामी, हनुमान्, गरुड आऽ तीमक स्वरण करैत छथि, हुनकर दूःस्वप्न नश्रु, भऽ जागत छन्हि ।

४. नहरौक समय-

गङ्गा च यद्गने चैर गौदारवि सबस्रति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जनेऽस्मिन् सन्निधिं करु ॥

हे गंगा, यद्गना, गौदारवी, सबस्रती, नर्मदा, सिङ्गु आऽ कारेवी पाव । एहि जनमे अपन सान्निध्य दिथ ।

३.उत्तर यसेन्द्रस्य हिमाद्रश्चर दक्षिणम् ।

रर्ष तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

सन्द्रक उत्तरमे आऽ हिमाद्रक दक्षिणमे भावत अछि आऽ ओतका सन्तति भावती कहलैत छथि ।

३.अहना द्रौपदी सीता तारा मन्दादरी तथा ।

पञ्चक ना स्वरैर्निर्ण महापातकनाशिकम् ॥

जे सभ दिन अहना, द्रौपदी, सीता, तारा आऽ मन्दोदरी, एहि पाँच सान्नी-स्वीक स्वरण करैत छथि, हुनकर सभ पाप नश्रु, भऽ जागत छन्हि ।

१.अश्विथोमा रैविरासो हनुमाँश्च रिभीषणः ।

पुपः पञ्चवामश्च सन्तते चिबङ्गीरिनः ॥



अग्निथोमा, रवि, रास, हनुमान्, रिभीषण, ह्रपाचार्य आं पवश्ववाम- ङ सात ठा चिबङ्गीरी कहरैत छथि ।

+साते भरतु स्रुतीता देरी शिखर रासिनी

उत्थेन तपसा नह्ना यथा पशुपतिः पतिः ।

सिद्धिः साद्य सतामस्तु प्रसादान्तुश्च धूर्जष्टैः

जाल्हरिफेननेखेर यनूपि शिनिः कना ॥

९. रानोहं जगदानन्द न मे राना सबस्रती ।

अपूर्णे पंचमे रर्षे र्णयामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूरस्मित मन्त्रशक्त यजुर्वेद अध्याय २२, मंत्र २२)

आ ब्रह्मन्निवन् प्रजापतिवृद्धिः । निर्भोकता देरताः । स्रवाङ्कृतिश्रुन्दः । षड्जः  
स्रवः ॥

आ ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मरुचि जायतामा वाष्ट्रे वाजुन्यः श्वरेऽगमरातिरापी महावथो  
जायतां दोग्धी धेनुर्दोतान्द्रानाशुः सन्तिः पृवङ्गिर्घोरा जिष्णु वथेष्ठाः स्रुतेयो हाराशु  
यजमानश्च रीरो जायतां निकामे-निकामे नः पृर्जन्ता रर्षितु फनरत्ना नः ०षपयः पचास्ता  
योगेष्कमो नः' कम्पताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोवथाः । शिद्रुणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणां हृदयसुत्र ।

ॐ दीर्घार्थिर्भर । ॐ सौभाग्यरती भर ।

हे भगरान् । अपन देशिमे स्रयोग्य आं सरुतु रिद्यार्थी उपेन्न होथि, आं श्रुतुके नाशि  
कएनिहाव सैनिक उपेन्न होथि । अपन देशिक गाय खुरं दुध दय रानी, रैवद भाव रहन  
कवधमे सक्कम होथि आं षोड १ ह्रवित कर्पे दोगय रना होए । स्रवीगण नगवक  
नेत्रु कवरोमे सक्कम होथि आं हरक सभामे ओजपूर्ण भाषण देरयरना आं नेत्रु  
देरोमे सक्कम होथि । अपन देशिमे जखन आरुथक होय रर्षा होए आं ०षपिक-रुष्टी  
सरुदा पविपक्रु होगत वहए । एरं क्रमे सभ तवहे हम्वा सभक कन्याण होए । शिद्रुक  
बुद्धिक नाशि होए आं मित्रक उदय होए ॥

मन्त्रार्थके कोन रसुक गह्ना कवरोक चाली तकव रर्षन एहि मन्त्रमे कएत गेन अह्ति ।

एहिमे राचकब्रुथापमानड्काव अह्ति ।





547X VIDEHA

खन्नय-

ब्रह्मन् - रिद्या आदि ग्रन्थसँ पविर्पूर्ण ब्रह्म

बाष्प्रे - देशिमे

ब्रह्मरुचिसी-ब्रह्म रिद्याक तेजसँ हकत

आ जायता- उपेन्न होए

बाजुन्यः - बाजा

शुभे- रिना डव रीना

अषर्या- राश चलेरामे निष्पण

शतिर्यापी- शिद्रुके तावण दय रीना

महावथो- पेघ वथ रीना रीव

दोग्ध्री- कामना(दुध पूर्ण कवए रीनी)

धेनुर्गोठान्-ड्रानाशुः धेनु-गौ रा राशी रीठान्-ड्रा- पेघ रीवद नाशुः - आशुः - ब्रुवित

सष्टिः - षोड १

पुवर्षिर्योरा- पुवर्षि- रारहावके पावण कवए रीनी योरा-सुवी

जिष्णु- शिद्रुके जीतए रीना

वथेष्ठाः - वथ पव श्चिब

सुभेयो- उन्तम सभामे

हाराशु- हारा जेहन

यजमानशु- बाजाक बाजामे

रीरो- शिद्रुके पवाजित कवएरीना



निका॒मे-निका॒मे-निश्चयहाकत॑ कार्यमे

नः -हमव॑ सभक

प॒र्जन्या॑-मेघ

र॒र्षतु॑-र॒र्षा हे॒ए

ह॒नर॒वा-उ॒त्तम॑ ह॒न र॑ना

उ॒षध॑यः - उ॒षधिः

प॒चा॒भ्या- पा॒क॒ए

यो॒गेष्क॒मो-ख॒नश्च॑ नश्च॒ करे॒रौक॑ हे॒तु॒ क॒एन॑ गे॒न॒ यो॒गक॑ व॒ष्का

नः'-हम॒वा सभ॑क हे॒तु

क॒म्प॒ताम्-स॒मर्थ॑ हे॒ए

त्रि॒वि॒धक॑ ख॒न॒राद॑- हे॒ त्रै॒ल॒ोका॑, हमव॑ बा॒ज्यमे॑ त्रै॒ल॒ोका॑ नीक॑ धार्मिक॑ रि॒द्या र॑ना, बा॒ज्य-  
री॒व, ती॒र्षदा॒ज, दु॒ध द॑ए र॑ना गाय, दौ॒गय॑ र॑ना ज॒न्तु॒ उ॒द्यमी॑ ना॒वी हो॒थि । पा॒र्जन्य॑  
ख॒रश्च॑क॒ता प॒डना॑ प॒व र॒र्षा दे॒थि, ह॒न दे॒य र॑ना गा॒छ पा॒क॒ए, हम॑ सभ॒ सर्प॑ति  
ख॒र्जित॑/स॒र्व॒ष्कित॑ क॒वी ।

बिदेह नूतन खंक भाषापक बचनानेखन-

गाँह्रिशिकोष-मैथिली- / मैथिलीकोष-गाँह्रिशि- प्रोजेक्टके आगु रँढ़ १७, अपन स्मार  
आ योगदान अ-मेन द्वावा [ggajendr@videha.com](mailto:ggajendr@videha.com) पव पठाउ ।

१.भावत आ नेपालक मैथिली भाषा-बैज्ञानिक लोकनि द्वावा रनाउव मानक शीरी आ  
२.मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठक्रम

१.नेपाल आ भावतक मैथिली भाषा-बैज्ञानिक लोकनि द्वावा रनाउव मानक शीरी



## १.१. नेपाक मैथिली भाषा बैज्ञानिक लोकनि द्वारा रैनाउन मानक उचावण खा लेखन शैली

(भाषाशास्त्री डा. वामारताव यादरक धावणाके पूर्ण कपर्स सङ्ग न२ निर्धारित)

### मैथिलीमे उचावण तथा लेखन

१. पञ्चमाक्षर खा अनुस्वार. पञ्चमाक्षरबानुशात ७, ए, ण, न एरै म अरैत अछि । संस्कृत भाषाक अनुस्वार शिर्षक अन्तमे जाहि रश्नाक अक्षर बँहत अछि ओही रश्नाक पञ्चमाक्षर अरैत अछि । जेना-

अर्क (क रश्नाक बहरौक कावणे अन्तमे ७ आएन अछि । )

पञ्च (च रश्नाक बहरौक कावणे अन्तमे ए आएन अछि । )

खल (छ रश्नाक बहरौक कावणे अन्तमे ण आएन अछि । )

सखि (त रश्नाक बहरौक कावणे अन्तमे न् आएन अछि । )

खसु (प रश्नाक बहरौक कावणे अन्तमे म् आएन अछि । )

उपर्युक्त रीत मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमाक्षरक रैदनामे अक्षिकाशि जगहपर अनुस्वारक प्रयोग देखन जागछ । जेना- अर्क, पच, खड, सधि, खड आदि । र्नाकवारिद पलित गोरिन्द नाक कहरँ छनि जे करश्ना, चरश्ना खा छरश्नासँ पूर् अनुस्वार निखन जाए तथा तरश्ना खा परश्नासँ पूर् पञ्चमाक्षर निखन जाए । जेना- अर्क, चचन, खडा, खल तथा कम्पन । ऋदा हिन्दीक निकट बहन आधुनिक लेखक एहि रीतकेँ नहि मानैत छथि । ओ लोकनि अन्तु खा कम्पनक जगहपर सेहो अर्तु आ कपन निखैत देखन जागत छथि ।

नरीन पञ्चति किछु सुरिपाजनक अरथु छैक । किएक तँ एहिमे समय खा स्थानक रँचत होगत छैक । ऋदा कतेक रैव हस्तलेखन रा ऋदणामे अनुस्वारक छोट सन रिन्दु स्पष्ट, नहि बेनासँ अर्थक अर्थ होगत सेहो देखन जागत अछि । अनुस्वारक प्रयोगमे उचावण-दोषक सम्वारना सेहो ततरै देखन जागत अछि । एतदर्थ कसँ न२ क२ परश्ना धरि पञ्चमाक्षरक प्रयोग कवरँ उचित अछि । यसँ न२ क२ त्र धरिक अक्षरक सङ्ग अनुस्वारक प्रयोग कवरैमे कतहु कोनो रिवाद नहि देखन जागछ ।

२. ट खा ठ : टक उचावण " व् ह" जकाँ होगत अछि । अतः जत२ " व् ह" क उचावण हो ओत२ मात्र ट निखन जाए । आन ठाम खानी ट निखन जवरौक चाही । जेना-



ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेडुआ, ठम्, ठेवी, ठाकनि, ठाठ आदि ।

ठ = पढ़ १ग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रँठरँ, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठी, पीठी आदि ।

उपर्यङ्ग शिद्ध, सभकेँ देखनासँ ङा स्रष्टु, होगत अछि जे साधारणतया शिद्धक शुकमे ठ आ मध्य तथा अन्तमे ठ अरैत अछि । अएह नियम ड आ डक सन्दर्भ सेहो नागु होगत अछि ।

३.र आ रँ : मैथिलीमे " र " क उच्चारण रँ कएन जागत अछि, झुदा ओकवा रँ कपमे नहि लिखन जाएरौक चाही । जेना- उच्चारण : रँदनाथ, रिद्या, नरँ, देरँता, रिष्टु, रँशि, रँदना आदि । एहि सभक स्थानपर अमरीः रँदनाथ, रिद्या, नर, देरता, रिष्टु, रंशि, रन्दना लिखरौक चाही । सामान्यतया र उच्चारणक लेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन, ओजह आदि ।

४.य आ ज्र : कतहु-कतहु " य " क उच्चारण " ज्र " जकाँ करैत देखन जागत अछि, झुदा ओकवा ज्र नहि लिखरौक चाही । उच्चारणमे यत्र, जदि, जझना, जूग, जारँत, जोगी, जद्, जम आदि कहन जाएरँना शिद्ध, सभकेँ अमरीः यत्र, यदि, यझना, हाग, यारत, योगी, यद्, यम लिखरौक चाही ।

३.ए आ य : मैथिलीक रतनीमे ए आ य दुनु लिखन जागत अछि ।

प्राचीन रतनी- कएन, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।

नरीन रतनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शिद्धक शुकमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शिद्ध, सभक स्थानपर यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कवरौक चाही । यद्यपि मैथिलीभाषी थारु सहित किछु जातिमे शिद्धक आवन्तामे " ए " केँ य कहि उच्चारण कएन जागत अछि ।

ए आ " य " क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीने पछतिक अनुसवण कवरँ उपहाङ्ग मानि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दुनुक लेखनमे कोनो सहजता आ दूकहतक रौत नहि अछि । आ मैथिलीक सरसधारणक उच्चारण-शीली यक अपेक्षा एसँ रँसी निकष्टु डैक । थारु क२ कएन, हएरँ आदि कतिपय शिद्धकेँ केन, हँरँ आदि कपमे कतहु-कतहु लिखन जाएरँ सेहो " ए " क प्रयोगकेँ रँसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि ।



७. हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पबम्पवामे कोनो रौतपव रौत दैत कार शिद्धक पाछाँ हि, हू नगाओन जागत छैक । जेना- हुनकहि, खपनहु, ओकबहु, तकानहि, छेष्टहि, खानहु खादि । झदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपव एकाव एरँ हूक स्थानपव ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हुनके, खपनो, तकाने, छेष्ट, खानो खादि ।

१. ष तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकारितः षक उच्चारण थ होगत अछि । जेना- षडान्द (खडयन्द), थोडशी (थोडशी), षष्टकोश (थष्टकोश), रूथेशी (रूथेशी), सन्तुष (सन्तुथ) आदि ।

+. प्रनि-रूप : निम्नलिखित अरस्थामे शिद्धसँ प्रनि-रूप भ२ जागत अछि:

(क) फ्रियान्नयी प्रब्य अयमे य रा ए वृष्णु भ२ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भ२ जागत अछि । ओकव आगाँ रूप-सूचक चिह्न रा रिकारी ( / २) नगाओन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) नेन, उठए (उठय) पडतौक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क नेन, उठ पडतौक ।

पठ२ गेनाह, क२ नेन, उठ२ पडतौक ।

(ख) प्रकानिक छत आय (आए) प्रब्यमे य (ए) वृष्णु भ२ जागछ, झदा रूप-सूचक रिकारी नहि नगाओन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाय (ए) देरँ, नहाए (य) अएनाह ।

अपूर्ण कप : था गेन, पठा देरँ, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रब्य अक उच्चारण फ्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनुमे वृष्णु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : दोसवि मानिनि चनि गेनि ।

अपूर्ण कप : दोसव मानिन चनि गेन ।

(घ) रतमान छदन्तक अन्तिम त वृष्णु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : पठैत अछि, रजैत अछि, गरैत अछि ।



अपूर्ण कप : पटे अछि, रजे अछि, गरै अछि ।

(७) क्रियापदक अरसान अक, उक, एक तथा ठीकमे वृत्त भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप: द्वियोक, द्वियेक, द्वीक, द्वैक, अरितेक, होगक ।

अपूर्ण कप : द्वियो, द्विये, द्वी, द्वै, अरिते, होग ।

(८) क्रियापदीय प्रबय न्ह, ह् तथा ठकावक लोप भ२ जागछ । जेना-

पूर्ण कप : द्विह, कहद्विह, कहद्वै, गेद्विह, नहि ।

अपूर्ण कप : द्विनि, कहद्वनि, कहद्वौ, गेद्विह, नहि, नै ।

९. **प्रनि स्थानान्तरण** : कोनो-कोनो स्वर-प्रनि अपना जगहसँ हटि क२ दोसव ठाम चलि जागत अछि । खास क२ द्रस्र अ आ उक स्रुद्धमे अ राँत नागु होगत अछि । मैथिलीकवण भ२ गेद्व शिद्धक मध्य रा अन्तमे जँ द्रस्र अ राँ उ आरँ उँ ओकव प्रनि स्थानान्तरित भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- शिनि (शिगन), पानि (पागन), दानि (दागन), माँटि (माँगँटि), काँड (काँडँड), माँस (माँडँस) आदि । ऋदा तसेम शिद्ध सभमे अ निअम नागु नहि होगत अछि । जेना- बग्गिँ वग्गिँ आ स्वर्गुँ स्वर्गुँस नहि कहत जा सकैत अछि ।

१०. **हलन्त ( )क प्रयोग** : मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त ( )क आरंभकता नहि होगत अछि । कावण जे शिद्धक अन्तमे अ उँचावण नहि होगत अछि । ऋदा संस्कृत भाषासँ जहिनक तहिना मैथिलीमे आँदर (तसेम) शिद्ध सभमे हलन्त प्रयोग कएत जागत अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिद्धकेँ मैथिली भाषा स्रुद्धी निअम अन्वसार हलन्तरिहीन बाअत गेद्व अछि । ऋदा वाकवण स्रुद्धी प्रयोजनक नेद्व अरंभक स्थानपव कतह्-कतह् हलन्त देद्व गेद्व अछि । प्रसुत पौथीमे मैथिली लेखनक प्राचीन आ नरीन दूनु शीलीक सबत आ समीचीन पक्ष सभकेँ समेटि क२ र्ण-रिगुस कएत गेद्व अछि । स्थान आ समयमे रँचतक सँद्वि हलन्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सबत होरँरँना हिसारँसँ र्ण-रिगुस मिलाओत गेद्व अछि । रँतमान समयमे मैथिली मात्राभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान नेरँ पडि बहत परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापव ध्यान देद्व गेद्व अछि । तखन मैथिली भाषाक मुँद्व रिशेषता सभ कृषिँत नहि होगक, ताँद्व दिस लेखक-मल्लद्व सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. वामारताव यादरक कहँ द्विनि जे सबतक अन्वसन्धानमे एहन अरंभ किन्तु ने आरँ देरँक चाली जे भाषाक रिशेषता हलन्तमे पडि जाँ ।

-(भाषाशास्त्री डा. वामारताव यादरक पावणकेँ पूर्ण कपसँ सँद्व त२ निरंभित)



## १.२. मैथिली अकादमी, पठना द्वारा निरखित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शिद्ध मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि रत्ननीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रत्ननीमे लिखल जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह

अथन

ठाग

जकब, तकब

तनिकब

अछि

अग्राह

अथन, अथनि, अथेन, अथनी

ठिमा, ठिना, ठिमा

जेकब, तेकब

तिनकब । (रैकम्पिक कर्पे ग्राह)

ईछ, अहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप रैकम्पिकतया अपनाओल जाय: भ२ गेल, भय गेल रा भ३ गेल । जा बहल अछि, जाय बहल अछि, जाए बहल अछि । कब गेलाह, रा कबय गेलाह रा कबय गेलाह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' प्रनिक स्थानमे 'न' लिखल जाय सकैत अछि यथा कहलनि रा कहलन्हि ।

४. 'अ' तथा 'अं' ततय लिखल जाय जत स्पष्टतः 'अर्' तथा 'अड' सदृश उच्चारण अछि हो । यथा- देखैत, छलैक, लौआ, छैक अलादि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शिद्ध अहि कर्पे प्रहाऊ होयत: जैह, सैह, अएह, ओह, लैह तथा दैह ।

६. ह्रस्व अकारांत शिद्धमे 'अ' के रूप कबई सामान्यतः अग्राह थिक । यथा- ग्राह देखि आरैह, मानिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे) ।



१. स्रुतव जस्र ' ए ' रा ' य ' प्राचीन मैथिलीक उह्रवण आदिमे तँ यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकस्पिक कर्पे ' ए ' रा ' य ' लिखन जाय । यथा:- कयन रा कएन, खयनाह रा खएनाह, जाय रा जाए गलादि ।

४. उचावणमे दु स्रुक रीच जे ' य ' पुनि स्रुतः आरि जागत खडि तकवा नेखमे स्थान रैकस्पिक कर्पे देन जाय । यथा- धीखा, खटेखा, रिखाह, रा धीया, खटेया, रियाह ।

६. सान्नासिक स्रुतव स्रुक स्थान यथासंभर ' ए ' लिखन जाय रा सान्नासिक स्रु । यथा:- मैएण, कनिएण, किवतनिएण रा मैखाँ, कनिखाँ, किवतनिखाँ ।

१०. कावकक रिभक्तिभक्त निम्नलिखित रूप ग्राह:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे । ' मे ' मे खनुस्राव सरिखा लाज्य थिक । ' क ' क रैकस्पिक रूप ' केव ' बाखन जा सकैत खडि ।

११. पूर्कातिक क्रियापदक रौद ' कय ' रा ' कए ' खरय रैकस्पिक कर्पे नगाउन जा सकैत खडि । यथा:- देखि कय रा देखि कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गलादि लिखन जाय ।

१३. खरि ' न ' ओ खरि ' म ' क रँदना खनुसाव नहि लिखन जाय, किंतु ङापक सुरिधार्य खरि ' ङ ' , ' ए ' , तथा ' ण ' क रँदना खनुसारो लिखन जा सकैत खडि । यथा:- खरि, रा खरि, खरन रा खरन, कण्ठ रा कण्ठ ।

१४. हनत चिह्न निखमतः नगाउन जाय, किंतु रिभक्तिभक्त संग खकावांत प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।

१५. सभ एकन कावक चिह्न शिछमे सँ क लिखन जाय, हँ क नहि, सँगाँ रिभक्तिभक्त हेतु फवाक लिखन जाय, यथा घब पबक ।

१७. खनुनासिककेँ चन्द्ररिन्दु द्वावा रङ्ग कयन जाय । पर्वत ऋद्रणक सुरिधार्य हि समान जर्जन मात्रापव खनुस्रावक प्रयोग चन्द्ररिन्दुक रँदना कयन जा सकैत खडि । यथा- हि केव रँदना हि ।

१९. पूर्ण रिवाय पासिसँ ( । ) सूचित कयन जाय ।

१४. समस्त पद सँ क लिखन जाय, रा हागहनसँ जोडि क , हँ क नहि ।

१६. लिख तथा दिख शिछमे रिकारी (२) नहि नगाउन जाय ।







प्रबन्का लोककेँ रँजेत स्वरँधि- मनोज२, रासुरमे ओ थ हाऊ ज् = ऊ रँजे छथि ।

हेव ऊ थछि ज् आ ए० क सहाऊ कदा गतत उचावण होगत थछि- गा । ओहिना क् थछि क् आ ष क सहाऊ कदा उचावण होगत थछि छ । हेव श् आ व क सहाऊ थछि ऐ ( जेना श्रैमिक) आ स् आ व क सहाऊ थछि ए (जेना मिस्र) । ए भेन त+व ।

उचावणक आँडियो हागत रिदेह आर्कागर <http://www.videha.co.in/> पव उपनद्ध थछि । हेव केँ / सँ / पव पूर्व अक्षरसँ सँ क२ निथु कदा ठँ / क२ सँ क२ । एँमे सँ मे पहिन सँ क२ निथु आ रौदरना सँ क२ । अँकक रौद ठी निथु सँ क२ कदा अण्य ठाम ठी निथु सँ क२ जेना

छसँ कदा सभ ठी । हेव उथ म सातम निथु- छठम सातम ले । घवरनामे रँवा कदा घवरानीमे रानी प्रहाऊ करु ।

बहए-

**बँह कदा सकै (उचावण सकै-ए) ।**

कदा कथनो कान बहए आ बँह मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कन्या जगहमे पार्किंग कवरौक अत्रास बँह ओकवा । पृष्ठनापव पता नागत जे दूनदून नाम्ना आ द्रावरव कनाई ब्रह्मक पार्किंगमे काज करैत बहए ।

छले, छनए मे सेहो ई तबहक भेन । छनए क उचावण छन-ए सेहो ।

संयोगले- (उचावण संजोगले)

**केँ क२**

केव- क (

**केव क प्रयोग गद्यमे ले करु , पद्यमे क२ सकै छी । )**

क (जेना वामक)

**वामक आ सँगे (उचावण वाम के / वाम क२ सेहो)**

**सँ- स२ (उचावण)**

चन्द्ररिन्दु आ खनुस्त्राव- खनुस्त्रावमे कँठ धरिक प्रयोग होगत थछि कदा चन्द्ररिन्दुमे ले । चन्द्ररिन्दुमे कनेक एकावक सेहो उचावण होगत थछि- जेना वामसँ- (उचावण वाम स२) वामकेँ- (उचावण वाम क२/ वाम के सेहो) ।



केँ जेना वामकेँ भेव हिन्दीक को (वाम को)- वाम को= वामकेँ

क जेना वामक भेव हिन्दीक का ( वाम का) वाम का= वामक

क२ जेना जा क२ भेव हिन्दीक कव ( जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेव हिन्दीक से (वाम से) वाम से= वामसँ

स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) एते चाक शिद्ध सरहक प्रयोग खराडित ।

के दोसब अर्थे प्रहाऊ भ२ सकेए- जेना, के कहवक ? रिभङ्गि “क”क रँदता एकव प्रयोग खराडित ।

नधि, नहि, नै, नग, नँग, नगँ, नगँ ई सबक उचावण खा लेखन - **नै**

अरु क रँदतामे अरु जेना महवपूर्ण (महवपूर्ण नै) जतए अर्थ रँदति जाए ओतहि मात्र तीन अक्षरक सहाजाक्षरक प्रयोग उचित । सम्पति- उचावण स स्र ग त (सम्पति नै- कावण सही उचावण आसानीसँ सञ्चर नै) । क्रुदा सरोतम (सरोतम नै) ।

वाश्चर्य (वाश्चर्य नै)

सकेए/ सके (अर्थ परिवर्तन)

**पोछेने/ पोछे नेन/ पोछए नेन**

**पोछेए/ पोछए/ (अर्थ परिवर्तन) पोछए/ पोछे**

ओ लोकनि ( लृष्ण क२, ओ मे रिकारी नै)

ओअ/ ओहि

ओहिनै/

ओहि नेन/ ओही व२

जखरो/ रैसरो

पँचअथा

देखियोक/ (देखिओक नै- तहिना अ मे ज्ञान खा दीर्घक मात्राक प्रयोग खराडित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तौ



547X VIDEHA

होएत / लएत

नहि/ नहि/ नग/ नग/ ने

सौसे/ सौसे

रैड /

रैड (सोवाउव)

गाए (गाए नहि), ऊदा गाएक दुध (गाएक दुध ने।)

बहलौ/ पहिबलौ

हमही/ खही

सरै - सभ

सरैलक - सभलक

धवि - तक

गप- रात

रूसरै - समयसरै

रूसलौ/ समयसलौ/ रूसनदू - समयनदू

हमवा खव - हम सभ

खाकि- खा कि

सकैछ/ करैछ (गद्यमे प्रयोगक खारणकता ने)

होएन/ होनि

जाएन (जानि ने, जेना देत जाएन) ऊदा जानि-रूसि (अर्थ परिवर्तन)

पथर/ जाथर

खाड/ जाड/ खाडू/ जाडू

मे, के, सँ, पव (शेहसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (शेहसँ लँ क२) ऊदा दूठा रा रैसी  
रिभञ्जि सँग बहनापव पहिन रिभञ्जि ठाँके सँ क२। जेना एमे सँ ।

एकठा, दूठा (ऊदा क२ ठा)



रिंकावीक प्रयोग शिद्धक अन्तमे, रीचमे अनारथक कर्पे ले । आकावास्तु आ अन्तमे अ क रौद रिंकावीक प्रयोग ले (जेना दिअ

, आ/ दिअ , आ, आ ले )

अपोज्झाहीक प्रयोग रिंकावीक रँदनामे कवरँ अन्वृत्त आ माव फॉर्स्टक तकनीकी नूनताक परिचायक)- ओना रिंकावीक संस्कृत कप २ अरग्रह कहन जागत अछि आ रतनी आ उचावण दू ठाम एकव लोप बँहत अछि/ बहि सकैत अछि (उचावणमे लोप बहिसे अछि) । ऊदा अपोज्झाही सेहो अंशेजामे पसेसिर केसमे होगत अछि आ फ्रेंचमे शिद्धमे जतए एकव प्रयोग होगत अछि जेना *raison d'etre* एतए सेहो एकव उचावण रैजोन डेष्टव होगत अछि, माने अपोज्झाही अरकाशे ले दैत अछि रवन जोडेते अछि, से एकव प्रयोग रिंकावीक रँदना देनाग तकनीकी कर्पे सेहो अन्वृत्त) ।

अगमे, एहिमे/ अँमे

जगमे, जाहिमे

अथन/ अथन/ अगथन

कै (के नहि) मे (अन्वृत्त बहिसे)

भ२

मे

द२

ठँ (त२, त ले)

सँ (स२, स ले)

गाछ तव

गाछ वग

साँस थन

जो (जो go, करै जो do)

ते/तअ जेना- ते दुआरे/ तगमे/ तगने

जै/जअ जेना- जै कावण/ जगसँ/ जगने



ई/अग जेना- ई कावण/ ईसँ/ अगने/ झदा एकव एकटा खास प्रयोग- नावति कतेक दिनसँ कहैत बहैत अग

लौ/वग जेना लौसँ/ वगने/ लौ दूखारे

नहँ/ लौ

गेलौ/ लेलौ/ लेवहँ/ गेवहँ/ लेवहँ/ लेव

जग/ जाहि/ जे

जहिगाम/ जाहिगाम/ जगगाम/ जेगाम

एहि/ अहि/

अग (बालक अंतमे ब्राह्मण) / ई

अगछ/ अछि/ ईछ

तग/ तहि/ ते/ ताहि

ओहि/ ओग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/ जीर

भनेही/ भवहि

ते/ तँग/ तँग

जाअर/ जाअर

नग/ ले

छग/ छे

नहि/ ने/ नग

गग/ ले

छनि/ छन्हि ...



**समथ** शेरुंदक संग जखन कोनो रिभक्ति जूठै छै तखन समै जना समैपव  
गत्यादि । असंगवमे **छदथ** खा रिभक्ति जूठने छदे जना छदेसँ, छदेमे गत्यादि ।

**जग/ जाहि/**

**जे**

**जाहिठाम/ जाहिठाम/ जगठाम/ जैठाम**

**एहि/ अहि/ अग/ ए**

**अगछ/ अछि/ एछ**

**तग/ तहि/ ते/ ताहि**

**ओहि/ ओग**

**सीथि/ सीथ**

**जीरि/ जीरी/**

**जीरै**

**भने/ भनेही/**

**भवहि**

**ते/ तग/ तथ**

**जाथरै/ जथरै**

**नग/ ने**

**छग/ छे**

**नहि/ ने/ नग**

**गग/**

**गे**

**छनि/ छन्हि**

**चूकन अछि/ गेव गछि**

**२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम**



नीचाँक सूचीमे देन बिकम्पमेसँ लैंग्वाज एडीष्टेब द्वारा कौन कप चुनन जेरौक चाही:  
रौलेड कएन कप त्राह:

१. होयरँना/ होरँयरँना/ होमयरँना/ हेरँ रँना, हेम रँना/ होयरँक/होरँयरँना /होएरँक

२. खा/खा२

**खा**

३. क जेने/क२ जेने/क३ जेने/क४ जेने/क५ जेने/क६ जेने/क७ जेने/क८ जेने/क९ जेने/क१० जेने/क११ जेने/क१२ जेने/क१३ जेने/क१४ जेने/क१५ जेने/क१६ जेने/क१७ जेने/क१८ जेने/क१९ जेने/क२० जेने/क२१ जेने/क२२ जेने/क२३ जेने/क२४ जेने/क२५ जेने/क२६ जेने/क२७ जेने/क२८ जेने/क२९ जेने/क३० जेने/क३१ जेने/क३२ जेने/क३३ जेने/क३४ जेने/क३५ जेने/क३६ जेने/क३७ जेने/क३८ जेने/क३९ जेने/क४० जेने/क४१ जेने/क४२ जेने/क४३ जेने/क४४ जेने/क४५ जेने/क४६ जेने/क४७ जेने/क४८ जेने/क४९ जेने/क५० जेने/क५१ जेने/क५२ जेने/क५३ जेने/क५४ जेने/क५५ जेने/क५६ जेने/क५७ जेने/क५८ जेने/क५९ जेने/क६० जेने/क६१ जेने/क६२ जेने/क६३ जेने/क६४ जेने/क६५ जेने/क६६ जेने/क६७ जेने/क६८ जेने/क६९ जेने/क७० जेने/क७१ जेने/क७२ जेने/क७३ जेने/क७४ जेने/क७५ जेने/क७६ जेने/क७७ जेने/क७८ जेने/क७९ जेने/क८० जेने/क८१ जेने/क८२ जेने/क८३ जेने/क८४ जेने/क८५ जेने/क८६ जेने/क८७ जेने/क८८ जेने/क८९ जेने/क९० जेने/क९१ जेने/क९२ जेने/क९३ जेने/क९४ जेने/क९५ जेने/क९६ जेने/क९७ जेने/क९८ जेने/क९९ जेने/क१०० जेने

४. भ गेन/भ२ गेव/भ३ गेव/भ४ गेव/भ५ गेव/भ६ गेव/भ७ गेव/भ८ गेव/भ९ गेव/भ१० गेव/भ११ गेव/भ१२ गेव/भ१३ गेव/भ१४ गेव/भ१५ गेव/भ१६ गेव/भ१७ गेव/भ१८ गेव/भ१९ गेव/भ२० गेव/भ२१ गेव/भ२२ गेव/भ२३ गेव/भ२४ गेव/भ२५ गेव/भ२६ गेव/भ२७ गेव/भ२८ गेव/भ२९ गेव/भ३० गेव/भ३१ गेव/भ३२ गेव/भ३३ गेव/भ३४ गेव/भ३५ गेव/भ३६ गेव/भ३७ गेव/भ३८ गेव/भ३९ गेव/भ४० गेव/भ४१ गेव/भ४२ गेव/भ४३ गेव/भ४४ गेव/भ४५ गेव/भ४६ गेव/भ४७ गेव/भ४८ गेव/भ४९ गेव/भ५० गेव/भ५१ गेव/भ५२ गेव/भ५३ गेव/भ५४ गेव/भ५५ गेव/भ५६ गेव/भ५७ गेव/भ५८ गेव/भ५९ गेव/भ६० गेव/भ६१ गेव/भ६२ गेव/भ६३ गेव/भ६४ गेव/भ६५ गेव/भ६६ गेव/भ६७ गेव/भ६८ गेव/भ६९ गेव/भ७० गेव/भ७१ गेव/भ७२ गेव/भ७३ गेव/भ७४ गेव/भ७५ गेव/भ७६ गेव/भ७७ गेव/भ७८ गेव/भ७९ गेव/भ८० गेव/भ८१ गेव/भ८२ गेव/भ८३ गेव/भ८४ गेव/भ८५ गेव/भ८६ गेव/भ८७ गेव/भ८८ गेव/भ८९ गेव/भ९० गेव/भ९१ गेव/भ९२ गेव/भ९३ गेव/भ९४ गेव/भ९५ गेव/भ९६ गेव/भ९७ गेव/भ९८ गेव/भ९९ गेव/भ१०० गेव

**गेव**

५. कव गेनाह/कव२

**गेवह/कव३ गेवह/कव४ गेवह/कव५ गेवह/कव६ गेवह/कव७ गेवह/कव८ गेवह/कव९ गेवह/कव१० गेवह/कव११ गेवह/कव१२ गेवह/कव१३ गेवह/कव१४ गेवह/कव१५ गेवह/कव१६ गेवह/कव१७ गेवह/कव१८ गेवह/कव१९ गेवह/कव२० गेवह/कव२१ गेवह/कव२२ गेवह/कव२३ गेवह/कव२४ गेवह/कव२५ गेवह/कव२६ गेवह/कव२७ गेवह/कव२८ गेवह/कव२९ गेवह/कव३० गेवह/कव३१ गेवह/कव३२ गेवह/कव३३ गेवह/कव३४ गेवह/कव३५ गेवह/कव३६ गेवह/कव३७ गेवह/कव३८ गेवह/कव३९ गेवह/कव४० गेवह/कव४१ गेवह/कव४२ गेवह/कव४३ गेवह/कव४४ गेवह/कव४५ गेवह/कव४६ गेवह/कव४७ गेवह/कव४८ गेवह/कव४९ गेवह/कव५० गेवह/कव५१ गेवह/कव५२ गेवह/कव५३ गेवह/कव५४ गेवह/कव५५ गेवह/कव५६ गेवह/कव५७ गेवह/कव५८ गेवह/कव५९ गेवह/कव६० गेवह/कव६१ गेवह/कव६२ गेवह/कव६३ गेवह/कव६४ गेवह/कव६५ गेवह/कव६६ गेवह/कव६७ गेवह/कव६८ गेवह/कव६९ गेवह/कव७० गेवह/कव७१ गेवह/कव७२ गेवह/कव७३ गेवह/कव७४ गेवह/कव७५ गेवह/कव७६ गेवह/कव७७ गेवह/कव७८ गेवह/कव७९ गेवह/कव८० गेवह/कव८१ गेवह/कव८२ गेवह/कव८३ गेवह/कव८४ गेवह/कव८५ गेवह/कव८६ गेवह/कव८७ गेवह/कव८८ गेवह/कव८९ गेवह/कव९० गेवह/कव९१ गेवह/कव९२ गेवह/कव९३ गेवह/कव९४ गेवह/कव९५ गेवह/कव९६ गेवह/कव९७ गेवह/कव९८ गेवह/कव९९ गेवह/कव१०० गेवह**

६.

**विख/दिख विख,दिय,विख,दिय /**

७. कव रँना/कव२ रँना/ कवय रँना कवैरँना/क व रँना /

**कवैरँना**

८. रँना रना (प्रकष), रानी (सूत्री) ९

**खाँव खाँव**

१०. प्रायः प्रायह

११. दुःख दुःख १

१२. चनि गेन चव गेव/चैन गेन

१३. देवखिन्ह देवखिन्ह, देवखिन

१४.

**देखवहि देखवनि/ देखजेन्ह**

१५. छखिन्ह/ छवहि छखिन/ छजेन्ह/ छवनि





547X VIDEHA

१७. चलेत/दैत चवति/दैति

१७. এখনো

अथनो

१८.

रैठनि रैठणन रैठहि

१९. ७/७२(सरनाम) ७

२०

७ (संयोजक) ७/७२

२१. कागि/काग्नि कागर्ग/कागु

२२.

जे जे/जे२ २३. ना-बुब ना-बुब

२४. केवहि/केवनि/कयवहि

२५. तखनत/ तखन त

२६. जा

बहव/जाय बहव/जाय बहव

२७. निकवय/निकवय

वागव/ वगव रैहवाय/ रैहवाय वागव/ वगव निकव/रैहवै वागव

२८. ७तय/ जतय जत/ ७त/ जतय/ ७तय

२९.

की बुबव जे कि बुबव जे

३०. जे जे/जे२

३१. कुदि / यादि(योन पावर) कुगद/यागद/कुद/याद/

यादि (योन)

३२. ओहो/ ओहो



३३.

**हँसय/ हँसय हँसय**

३४. लौ आकि दस/लौ किंरा दस/ लौ रा दस

३५. सास-ससुव सास-ससुव

३७. छह/ सात छ/छः/सात

३९.

**की की / की२ (दीर्घाकाराबुधे २ रज्जित)**

३९. जरौरँ जरारँ

३९. कबयताह/ करेताह कबयताह

४०. दवान दिशि दवान दिशि/दवान दिस

४९

**गेवाह गधवाह/गयवाह**

४२. किछ आव/ किछ ँव/ किछ आव

४३. जाध छव/ जाधत छव जाति छव/जैत छव

४४. पहुँचि/ भेटँ जाधत छव/ भेटँ जाध छव पहुँचि/ भेटँ जाधत छव

४५.

**जरौन (हरा)/ जरान(होँजी)**

४७. वय/ वय क/ क२/ वय कय / व२ क२/ व२ कय

४९. व/व२ कय/

**कय**

४९. अथन / अथने / अथन / अथने

४९.

**अहीकेँ अहीकेँ**

५०. गहीव गहीव



ॐ.१.

**धाव पाव केनाथ धाव पाव केनाथ/केनाथ**

ॐ.२. जेकाँ जेकाँ

**जकाँ**

ॐ.३. तहिना तेहिना

ॐ.४. एकव थकव

ॐ.५. रहिनउ रहिनोथ

ॐ.६. रहिन रहिनि

ॐ.७. रहिन-रहिनोथ

**रहिन-रहनउ**

ॐ.८. नहि/ ले

ॐ.९. कवरौ / कवरौथ/ कवरौथ

ॐ.१०. तँ/ त २ तय/तथ

ॐ.११. बैयारी मे छेठ-भाथ/भै, जेठ-भाथ/भाथ

ॐ.१२. गिनतीमे दू भाग/भाथ/भाथ

ॐ.१३. ग्रा पोथी दू भागक/ भाँग/ भाथ/ नेन । यारत जारत

ॐ.१४. माथ मे / माथ रूदा माथक ममता

ॐ.१५. देखि/ दथन दनि/ दथि/ दथि दथि/ देखि

ॐ.१६. द/ द२/ दथ

ॐ.१७. उ (संयोजक) उ२ (सरनाम)

ॐ.१८. तका कथ तकाथ तकाथ

ॐ.१९. पैरे (on foot) पथरे कथक/ कैक

१०.

**ताहमे/ ताहमे**



547X VIDEHA

१९.

**प्रतीक**

१२.

**रैजा कय/ कय / क२**

१३. रैननाय/रैननाथ

१४. कोवा

१३.

**दिनुका दिनका**

१७.

**ततहिम**

११. गवरौवन्धि/ गवरौवनि/

**गवरौवन्धि/ गवरौवनि**

१५. रौव रौव

१७.

**चेन्हे चिन्हा (अक्षर)**

+०. जे जे

+९

**. से/ के से/के**

+२. अथुनका अथुनका

+३. भूमिहाव भूमिहाव

+४. सुगव

**/ सुगक/ सुगव**

+३. सठठाक सठठाक +७.

**छुरि**



547X VIDEHA

+१. कवगयो/ओ करैयो ले देवक /कवियो-कवगयो

++ प्रवावि

प्रवाव

+२. सगड १-साँटी

सगड १-साँटी

२०. पएरे-पएरे पैरे-पैरे

२१. खेवएरक

२२. खेजेरक

२३. वगा

२४. होए- हो - होखए

२५. रूमव रूमव

२७.

रूमव (संरोधन अर्थमे)

२१. येठ यएठ / अएठ/ सेठ/ सएठ

२४. तातिव

२६. अयनाय- अयनाग/ अयनाग/ एनाग

२००. निन्न- निन्द

२०५.

रिन्न रिन्न

२०२. जाए जाग

२०३.

जाग (i n different sense)-last word of sentence

२०४. छत पव आरि जाग

२०३.



547X VIDEHA

ले

१०७. खेवाए (pl ay) – खेवाए

१०१. शिकाएत- शिकायत

१०१.

ठप- ठप

१०६

. पठ- पठ

११०. कनिए/ कनिये कनिए

१११. बाकस- बाकस

११२. होए/ होय होए

११३. खडबदा-

खडबदा

११४. बूमेवहि (different meaning- got understand)

११५. बूमएवहि/बूमेवनि/ बूमयवहि (understood himself)

११७. चनि- चव/ चवि गेव

१११. खधाए- खपाय

१११.

मोन पाडवखिह/ मोन पाडवखिन/ मोन पाववखिह

११६. कैक- कएक- कएक

१२०.

वग वग

१२१. जवनाए

१२२. जवनाए जवनाए- जवनाए/

जवनाए



547X VIDEHA

१२३. होषत

१२४.

गबरेवहि/ गबरेवनि गबरोवहि/ गबरोवनि

१२५.

टिखेत- (to test) टिखत

१२७. कबखयो (willing to do) करैयो

१२९. जेकवा- जकवा

१२४. तकवा- तेकवा

१२६.

रिदेसब स्थानमे/ रिदेसरे स्थानमे

१३०. कबरैयतहुं/ कबरैएतहुं/ कबरैतहुं कबरैतौ

१३१.

हाकि (उचावण हाक्क)

१३२. ओजन रजन खाकसोच/ खाकसोस कागत/ कागच/ कागज

१३३. खाधे भाग/ खाध-भागे

१३४. पिचा / पिचाय/पिचाए

१३५. नएण/ ने

१३७. रैचा नएण

(ने) पिचा जाय

१३९. तखन ने (नएण) कठत खडि । कठ/ सुने/ देखे छव रुदा कठत-कठत/ सुनेत-सुनेत/ देखेत-देखेत

१३४.

कतेक गोष्टे/ कतक गोष्टे

१३६. कमाख-धमाख/ कमाङ्ग- धमाङ्ग



547X VIDEHA

१४०

. वग वग

१४१. खेवाथ (f or pl ayi ng)

१४२.

छथिन्ह/ छथिन

१४३.

होथत होथ

१४४. का कियो / केउ

१४५.

केशे (hai r)

१४७.

केस (court -case)

१४१

. रैननाथ/ रैननाथ/ रैननाथ

१४४. जलनाथ

१४६. कबसी कबसी

१४७. चवचा चर्चा

१४८. कर्म कर्म

१४९. डुरौरैथ/ डुरौरै/ डुरारै डुरारैथ/ डुरारैथ

१५०. एथुनका/

अथुनका

१५१. वथ/ विथथ (राकाक अंतिम शेरु)- वथ

१५२. कथक/

केक





547X VIDEHA

१३.७. गवमी गर्मी

१३.१

. रवदी रदी

१३.४. सना गेवाठ सना / सना२

१३.६. एनाथ-गेनाथ

१३.०.

तेना ले घेबवहि/ तेना ले घेबवनि

१३.५. नथि / ले

१३.२.

डरो डरो

१३.३. कतह/ कते कही

१३.४. उमबिगब-उमेबगब उमबगब

१३.३. भबिगब

१३.७. धोव/धोखव धोएव

१३.१. गप/गप्प

१३.४.

के के

१३.६. दवरैज्जा/ दवरैजा

१३.०. ठाम

१३.५.

धबि तक

१३.२.

घुबि लोष्ट

१३.३. खोबरैक



547X VIDEHA

११४. रूँड

११५. रौँ/ रूँ

११७. रौँहि ( पद्यमे त्राह्य)

११९. रौँही / रौँहि

११९.

कवरौँअ कवरौँअये

११९. अकेटा

१२०. कवितथि / कवतथि

१२०.

पहुँचि/ पहुँच

१२२. बाखवन्हि बखवन्हि/ बखवनि

१२३.

वगवन्हि/ वगवनि वागवन्हि

१२४.

सुनि (उचावण सुअन)

१२५. अछि (उचावण अगच्छ)

१२७. एवथि गेवथि

१२९. रिँतओने/ रिँतेने/

रिँतेने

१३०. कवरौँअन्हि/ कवरौँवनि/

करेवथिन्ह/ करेवथिन

१३१. कवएवन्हि/ करेवनि

१३०.

आकि/ कि



547X VIDEHA

१९१. पड़ैचि।

पड़ैच

१९२. रँझी जबाय/ जबाय जबा (खागि नगा)

१९३.

से से

१९४.

हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ रिभक्तिमे छ्हा कथ)

१९५. खेव खेव

१९६. खणव(spaci ous) खेव

१९७. होयतहि/ होयतहि/ होयतनि/हेतनि/ हेतहि

१९८. हाथ मटियाँ/ हाथ मटियाँ/हाथ मटियाँ

१९९. खेका खेका

२००. देखा देखा

२०१. देखाँ

२०२. सबवि सबव

२०३.

साठेरें साठेरें

२०४. गेलैन्ह/ गेलैन्ह/ गेलैन्ह

२०५. छेरौक/ छेरौक

२०६. केनो/ केनो/केनो/ केनो

२०७. किछ न किछ/

किछ ले किछ

२०८. घुमेनहूँ/ घुमोनहूँ/ घुमेनो

२०९. एवाक/ एवाक



547X VIDEHA

२१०. अः / अह

२११. वय /

वय (अर्थ- परिवर्तन) २१२. कनीक / कलेक

२१३. सरलक / सलक

२१४. मिता २ / मिवा

२१५. क २ / क

२१६. जा २ /

जा

२१७. आ २ / आ

२१८. भ २ / भ ( कालिक कमीक द्यातक)

२१९. निश्रय / नियम

२२०

.लेबट्थव / लेबट्थव

२२१. पहिव अश्रव ठा / रौदक / रौचक ठ

२२२. तहि / तहि / तधि / ते

२२३. कहि / कही

२२४. तँ /

ते / तँ

२२५. नँ / नँ / नधि / नहि / ले

२२६. ते / रुए / एवीहें /

२२७. छधि / छे / छेक / छग

२२८. दृष्टि / दृष्टियें

२२९. आ (come) / आ (conjunction)

२३०.



## अ (conjunct i on) / आ (come)

२३१. कनो / कनो कनो / केना

२३२. गेदोह-गेवहि-गेवनि

२३३. हेरौक- होएरौक

२३४. केदो- कएदो-कएदहँ/केदो

२३५. किछ न किछ- किछ न किछ

२३६. केहन- केहन

२३७. आ (come)-अ (conjunct i on-and) / आ । आरौ-आरौ / आरौह-आरौह

२३८. हएत-हैत

२३९. घुमेनहँ-घुमएनहँ- घुमेवारे

२४०. एवक- अएवक

२४१. होनि- होअन/ होहि/

२४२. ओ-वाम ओ आमक रौच (conjunct i on), ओ कहक (he said) / ओ

२४३. की हए/ कोसी अएवी हए/ की है। की हए

२४४. दृष्टिअ/ दृष्टियै

२४५.

२४६. गोयिब/ सामेव

२४७. तै / तै / तयि / तहि

२४८. जौ

२४९. जाँ / जाँ

२५०. सब/ सरौ

२५१. सबक/ सरौहक

२५२. कहि/ कही

२५३. कनो / कनो / कनहँ /



२७२. **कावकती भ२ गेव/ भ३ गेव/ भ४ गेव**

२७३. **केना/ केना/ कन्ना/ कना**

२७४. **खः/ खह**

२७५. **जने/ जनए**

२७६. **गेवनि/**

**गेवाह (अर्थ परिवर्तन)**

२७७. **केवहि/ कएवहि/ केवनि/**

२७८. **वय/ वय/ वयह (अर्थ परिवर्तन)**

२७९. **कनीक/ कनेक/ कनी-मनी**

२८०. **पठेवहि पठेवनि/ पठेवण/ पपठेवहि/ पठेवनि/**

२८१. **निश्चय/ नियम**

२८२. **हेबठेखव/ हेबठेखव**

२८३. **पठिव अखव बहने ठ/ रीचमे बहने ठ**

२८४. **आकाबान्तमे रिक्काविक प्रयोग उचित नै/ अपोस्ट्रॉफिक प्रयोग हान्स्टिक तकनीकी नूनताक परिचायक ओकव रीदना अरग्रह (रिक्कावी) क प्रयोग उचित**

२८५. **केव (पद्यमे ब्राह्म) / -क/ क२/ के**

२८६. **ठेहि- ठुहि**

२८७. **वदेथ/ वदेथे**

२८८. **हेथत/ हथत**

२८९. **जाथत/ जथत/**

२९०. **आथत/ अथत/ आउत**

२९१.

**आथत/ अथत/ येत**

२९२. **पिअरौक/ पिअरौक/पियेरौक**



२१३. युक्/ युक्ठ

२१४. युक्ते/ युक्थ

२१५. अतह/ अउतह/ एतह/ उतह

२१६. जाहि/ जाण/ जण/ जै

२१७. जाणत/ जैतए/ जणतए

२१८. आधव/ अधन

२१९. कैक/ कएक

२२०. आयन/ अधन/ आधव

२२१. जाध/ जअध/ जध (नानति जाध नगतीह । )

२२२. नकएन/ नकाधव

२२३. कर्तुआधव/ कर्तुअधन

२२४. ताहि/ तै/ तध

२२५. गायरै/ गाधरै/ गधरै

२२६. सकै/ सकए/ सकय

२२७. सेवा/ सवा/ सवाध (भात सवा गेन)

२२८. कहत बरी/ देखैत बरी/ कहत छुनौ/ कह छुनौ- अहिना चलेत/ पटेत

(पटे-पटेत अर्थ कखनो काव परिवर्तित) - आव बुमै/ बुमैत (बुमै/ बुमै छी रुदा बुमैत-बुमैत)/ सकैत/ सकै। करैत/ करै। दै/ दैत। डैक/ डै। रचलै/ रचलैक। बखरौ/ बखरौक। रिन/ रिन। बातिक/ बातिक बुमै आ बुमैत केव अपन-अपन जगहपव प्रयोग समीचीन अछि। बुमैत-बुमैत आरै बुमविर्ष। हमरु बुमै छी।

२२९. दुआरे/ दारे

२३०. भैष्ट/ भैष्ट/ भैष्ट

२३१.

खन/ खीन/ खना (भोव खन/ भोव खीन)

२३२. तक/ धवि



२९३. ग२/ गौ (meaning different - जनरौ ग२)

२९४. स२/ सँ (रूदा द२, व२)

२९५. ७. ७. ७. (तीन अक्षरक मेव रँदना पुनरुक्ति एक था एकठा दोसरक उपयोग) आदिक रँदना व्रु आदि । मह७. ७. ७. ७. कर्त्ता/ कर्त्ता आदिमे त्रु सहाजक कोनो आरथकता मैथिलीमे नै थडि । रङ्गर

२९७. रैसी/ रैसी

२९९. रौना/राना रँवा/ रना (बैरँना)

२९९

३००. रावी/ (रँदनेरावी)

३०१. राती/ राती

३०२. खलुबख्खिद्य/ खलुबख्खिद्य

३०३. लेमए/ लेरँए

३०४. वयडुक्का नयडुक्का

३०५. वगौ/ वगौ (

भैठैत/ भैठै)

३०६. वागव/ वगव

३०७. हरौ/ हरौ

३०८. बाखक/ बखक

३०९. था (come)/ था (and)

३१०. पश्चाताप/ पश्चाताप

३११. २ केव रारहाव शिद्धक खलुमे मात्र, यथासंभर रीचमे नै ।

३१२. कठत/ कठ

३१३.

बख (डव)/ बैठ (डवौ) (meaning different )

३१४. तागति/ ताकति





३५२. खवाग/ खवारें

३५३. रौगन/ रौनि/ रौगनि

३५४. जाठि/ जाथठ

३५५. कागज/ कागच/ कागत

३५६. गिले (meaning different - swallow)/ गिले (शमल)

३५७. वास्तिव/ वास्तिव

## DATE-LIST (year – 2013-14)

(१४२१ कसवी साव)

### Marriage Days:

Nov.2013- 18, 20, 24, 25, 28, 29

Dec.2013- 1, 4, 6, 8, 12, 13

January 2014- 19, 20, 22, 23, 24, 26, 31.

Feb.2014- 3, 5, 6, 9, 10, 17, 19, 24, 26, 27.

March 2014- 2, 3, 5, 7, 9.

April 2014- 16, 17, 18, 20, 21, 23, 24.

May 2014- 1, 2, 8, 9, 11, 12, 18, 19, 21, 25, 26, 28, 29, 30.

June 2014- 4, 5, 8, 9, 13, 18, 22, 25.

July 2014- 2, 3, 4, 6, 7.

### Upanayana Days:

February 2014- 2, 4, 9, 10.

March 2014- 3, 5, 11, 12.

April 2014- 4, 9, 10.



June 2014- 2, 8, 9.

***Dviragaman Din:***

November 2013- 18, 21, 22.

December 2013- 4, 6, 8, 9, 12, 13.

February 2014- 16, 17, 19, 20.

March 2014- 2, 3, 5, 9, 10, 12.

April 2014- 16, 17, 18, 20.

May 2014- 1, 2, 9, 11, 12.

***Mundan Din:***

November 2013- 20, 22.

December 2013- 9, 12, 13.

January 2014- 16, 17.

February 2014- 6, 10, 19, 20.

March 2014- 5, 12.

April 2014- 16.

May 2014- 12, 30.

June 2014- 2, 9, 30.

**FESTIVALS OF MTHILA (2013-14)**

Mauna Panchami -27 July

Madhushravani - 9 August



Nag Panchami - 11 August  
Raksha Bandhan- 21 Aug  
Kri shnast ami - 28 August  
Kushi Amavasya / Somvari Vrat - 5 Sept ember  
Hart al i ka Teej - 8 Sept ember  
Chaut hChandr a-8 Sept ember  
Vi shwak ar ma Pooj a- 17 Sept ember  
Anant Cat ur dashi - 18 Sep  
Pi t ri Paksha begi ns- 20 Sep  
Ji moot avahan Vrat a/ Ji ti a-27 Sep  
Mat ri Navami -28 Sep  
Kal ashst hapan- 5 Oct ober  
Bel naut i - 10 Oct ober  
Pat ri ka Pr avesh- 11 Oct ober  
Mahast ami - 12 Oct ober  
Maha Navami - 13 Oct ober  
Vi j ya Dashami - 14 Oct ober  
Koj agar a- 18 Oct  
Dhant er as- 1 November  
Di yabat i , shyama pooj a-3 November  
Annakoot a/ Govar dhana Pooj a-4 November



Bhr at ri dwi ti ya/ Chi t r agupt a Pooj a- 5 November

Chhat hi -8 November

Sama Pooj aar ambh- 9 November

Devot t han Ekadashi - 13 November

r avi vr at ar ambh- 17 November

Navanna par van- 20 November

Kart i kPoor ni ma- Sama Vi sar j an- 2 December

Vi vaha Panch mi - 7 December

Makar a/ Teel a Sankr ant i -14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 29 January

Basant Panch mi / Sar aswat i Pooj a- 4 February

Achl a Sapt mi - 6 February

Mahashi var at ri -27 February

Hol i kadahan-Fagua-16 Mar ch

Hol i - 17 Mar ch

Sapt ador a- 17 Mar ch

Var uni Tr ayodashi -28 Mar ch

Jur i shi t al -15 April

Ram Navami - 8 April

Akshaya Tritiya-2 May

Janaki Navami - 8 May



Ravi Br at Ant - 11 May

Vat Savitri -bar asait - 28 May

Ganga Dashhar a-8 June

Hari vasar Vr at a- 9 July

Shr ee Gur u Poor ni ma-12 Jul

VI DEHA ARCHI VE

पत्रिकाक सब्ठा पुरान अंक ब्रैल-बिदेह अ. तिवहता आ देरनागरी रूपमे Vi deha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह अर्थक ३.०पत्रिकाक पहिल -

बिदेह अम सँ आगाँक अंक ३.०पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-i/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-ii/>

२.मेथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi>

इडियो संकलन आँ मेथिली. Maithili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>

४.मेथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video>

३. आधुनिक चित्रकला आ चित्र /मिथिला चित्रकला.Mthila Painting/ Modern Art and Photos



<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

-बिदेह-क एहि सब सहयोगी विक्रम सेहो एक रेव जाड ।

७.बिदेह मैथिली क्लिज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१.बिदेह मैथिली जानरुत एग्रीगेटव :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४.बिदेह मैथिली साहित्य अंशेजरीमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६.बिदेहक पूर-कप "भारतसबिक गाड" :

<http://gajendrat hakur.blogspot.com/>

१०.बिदेह गडैक :

<http://videha123.blogspot.com/>

११.बिदेह कागत :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिल तिवहता (मिथिला-सब) जानरुत (बन-गा)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. बिदेह:ब्रेन: मैथिली ब्रेनमे: पहिल रेव बिदेह द्वारा

<http://videha-brainline.blogspot.com/>

१४. VIDEHA | IST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archives.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पारिष्किक ङ पत्रिका मैथिली पोथीक आकाशगर

<http://videha-pothi.blogspot.com/>



१७. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद बिदेह १३३ म अंक ०१ जुलाई २०१३ (वर्ष ६ मास ६७ अंक १३३) आडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

१८. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद बिदेह १३३ म अंक ०१ जुलाई २०१३ (वर्ष ६ मास ६७ अंक १३३) रेडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>

१९. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद बिदेह १३३ म अंक ०१ जुलाई २०१३ (वर्ष ६ मास ६७ अंक १३३) मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-painting-photos.blogspot.com/>

२०. मैथिल आब मिथिला (मैथिलीक सबसँ लोकप्रिय जानबूत)

<http://maithilaurmaithila.blogspot.com/>

२१. श्रुति प्रकाशन

<http://www.shrutipublication.com/>

२२. <http://groups.google.com/group/videha>

२३. <http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२४. गजेन्द्र ठाकुर अडेक

<http://gajendrat hakur123.blogspot.com>

२५. मना कुठका


<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२६. बिदेह रेडियोकारिता आदिक पहिल पौडकास्ट सांघ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२७.  Videha Radio



२१.  Join of f i c i a l Vi deha f a c e b o o k g r o u p .

२४. बिदेह मैथिली नाष्ठ उमेर

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२६. समदिया

<http://esamad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अनचिन्हार आखर

<http://anchinharakharakolkata.blogspot.com/>

३२. मैथिली हागकु

<http://maithili-hai-ku.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. बिहनि कथा

<http://vihani-katha.blogspot.in/>

३५. मैथिली करिजा

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३७. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३९. मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.in/>





**महत्त्वपूर्ण सूचना:** The Maithili pdf books are AVAILBLE FOR free PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>  
<http://videha123.wordpress.com/>  
<http://videha123.wordpress.com/about/>



रिदेह:सदेह:१: २: ३: ४:३:७:१:४:६:१० "रिदेह"क श्रिष्ट संस्करण: रिदेह-अ-पत्रिका (<http://www.videha.co.in/>) क चूनन बचना सम्मिन्त ।



सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at publishers's (print - version) site <http://www.shruti-publication.com> or you may write to [shruti.publication@shruti-publication.com](mailto:shruti.publication@shruti-publication.com)

रिदेह



मैथिली साहित्य खान्दान

(c)२००४-१३. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए सम्पादकाधीन । रिदेह- प्रथम मैथिली पाष्किक ङ-पत्रिका । SSN 2229-547X  
VI DEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-सम्पादक: उमेश मंडव । सहायक सम्पादक: शिर कमार सा आ कुमारी (मनोज कमार कर्ण) । भाषा-सम्पादन: नागेंद्र कमार सा आ पञ्जीकार रिद्वानन्द सा । कथा-सम्पादन: ज्ञाति सा चौधरी आ बगि बेथा सिन्हा । सम्पादक-शोध-अनुसंधान: डा. जया रमा आ डा. बाजीर कमार रमा । सम्पादक- नाटक-वर्गमंच-चवटिच- रेंचन ठाकुर । सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पुनम मंडव आ प्रियंका सा । सम्पादक- अनुवाद विभाग- रिनित उपेव ।

बचनाकाब अपन मौरिक आ अप्रकाशित बचना (जेकर मौरिकताक संपूर्ण उतुवदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) केँ मेर अटैचमेण्टक रूपमें .doc, .docx, .rtf रा .txt फॉर्मेटमें पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकाब अपन सम्प्लिस्टु पविचय आ अपन स्कैन कएत गैत फोर्से पठैतह, से आशी करैत छी । बचनाक अंतमें षागप बहय, जे ङ बचना मौरिक अछि, आ पहिल प्रकाशिनक हेतु रिदेह (पाष्किक) ङ पत्रिकारकेँ देत जा बहन अछि । मेर प्राप्त होयराक बाद यथासंभव शीघ्र ( सात दिनक भीतर) एकब प्रकाशिनक अंकक सूचना देत जायत । 'रिदेह' प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका अछि आ ईमें मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमें मिथिला आ मैथिलीसँ संप्रिषित बचना प्रकाशित कएत जायत अछि । एहि ङ पत्रिकारकेँ श्रीमति नन्दा ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १३ तिथिकेँ ङ प्रकाशित कएत जायत अछि ।

(c) 2004-13 सर्वाधिकार स्वस्मित । रिदेहमें प्रकाशित सभ्ठा बचना आ आर्कागरक सर्वाधिकार बचनाकाब आ संप्रहकर्तिक त्रगमें छन्हि । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशिन



किंरा आर्कागरक उपयोगक अधिकार किनरौक हेतु [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब संपर्क करु । एहि सागठकेँ प्रीति न्ना ठारुब, मधुनिका चौधरी आ बन्धि प्रिया द्वारा डिजाइन कएल गेल ।



सिंहिबडु

